शापग्रस्त

श्याममोहन अस्थाना

शापग्रस्त
श्याममोहन अस्थाना

आदिम युग से लेकर अद्यतन मानव समूहों के सामूहिक चिंतन अनुभव और संचित संस्कार रचनात्मकता के लिए बराबर चुनौती उपस्थित करते हैं। मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक अनुभव की निरन्तरता को, सामूहिक अवचेतन के रूप में विकसित यथार्थ को, व्यक्ति एवं समाज के जातीय विश्वासों आस्थाओं एवं मूल्यों की समानता को कैसे और किन मुहावरों में समझा जाय यह साहित्य ही नहीं समकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनैतिक परिदृश्य में भी गभीर विमर्श का विषय रहा है। इस विमर्श ने हिन्दी जागत को रचनात्मक रूप से समृद्ध भी किया है और मिथकीय प्रतीकों पुराकथाओं पर आधारित कई महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सामने आई हैं। आज जब तकनीक एवं लाभदायकता के वर्चस्व ने मनुष्य को कोरा बुद्धिवादी बना दिया है, मानुष–भाव यांत्रिक बोझ के तले दबकर सांस तोड़ रहा है तब मानव जाति को प्रकृति के विभिन्न रागात्मक रहस्यों, लोक संस्कृतियों, अतीत–मूल्यों एवं इतिहास–सत्य के विभिन्न घटनाचक्रों से निकले निष्कर्षों से जोड़कर मिथकों, पुराकथाओं पर आधारित यह रचनात्मक हिन्दी मन को तोष दे रही है, वहीं युग की धड़कन को मानवीय स्वर भी प्रदान कर रही है। प्रो. श्याम मोहन अस्थाना का नाटक 'शापग्रस्त' राजाबेन, भीलयुवती नेमा और राजपुरोहित आदि की पुराकथा के माध्यम से इसी मानवीयता को स्वर देता है। आज भी जब 'राजगुरु' जैसों का राजनिकाला हो रहा है, 'भीलराजाओं' और 'नेमाओं' की अस्मत खतरे में है, 'वनदहन' जारी है—यह कृति 'अधर्म की व्यवस्था' एवं 'राक्षस–राज के विरोध' के नाट्य सत्य का साधारणीकरण कर अपने को स्थापित करती है। आज भी 'राजा बेन' हैं, प्रजा को भ्रष्टाचार एवं असुरक्षा सता रही है, 'राजा' अपने को राज्य और नीति दोनों का सर्वोच्च अधिपति समझ बैठा है, धर्म, नीति, आचरण सभी के नियमों का खंडन हो रहा है और इनकी चर्चा तक को राजसत्ता अपमान और विद्रोह समझ रही है तब यह नाटक इस अमानवीयता एवं भदेसपन के भीतर से भविष्य के लिये नये आत्मबल और आत्मविश्वास का संचरण करता है।

दूसरा नाटक 'दृष्टिहीन–दिशाहीन' रोजमर्रा की साधारण सामाजिक पारिवारिक स्थितियों से प्लॉट लेकर स्वातंत्र्योत्तर भारत की विडंबना को सम्प्रेषित करने में सफल है। देश की आजादी के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने वाली लोगों की पीढ़ी के सपने के टूटने के दर्द और आजादी के बाद बेराजगारी दहेज, नशाखोरी, भ्रष्टाचार आदि का दंश झेल रही युवापीढ़ी की दृष्टिहीनता–दिशाहीनता को उभारता यह नाटक व्यवस्था के छल का पर्दाफाश करता है। तमाम निराशापूर्ण व भदेस स्थितियों से गुजरकर भी नाटककार का स्वर आशावादी है। नाटक मानता है कि देश का मूल संकट है 'चरित्र का संकट' और 'देश की असली सीमा हमारे आत्मा के भीतर है, हमें वहीं बंदूक तानकर खड़ा होना होगा'...... 'समस्याओं की मकड़जाल से निकलने के लिये नये विचारों की खेती करनी होगी'..... 'देश में समस्याए हैं दुःख है, पीड़ा है, पर उससे लड़ना है, अंतिम विजय सत्य की होगी पर उसके लिये नई पीढ़ी को संघर्ष करना होगा।'

समकालीन दर्द, लोकसंस्कृति एवं लोकभाषा के रंग में रंगे प्रो अस्थाना के ये दोनों ही नाटक मंचीयता के मुहावरों को साधने में समर्थ हैं और इनका मंचन हिन्दी के अपने रंगमंच को अवश्य ही समृद्ध करेगा।

डॉ रमेश गौतम
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

शापग्रस्त

शापग्रस्त

श्याम मोहन अस्थाना

राधारानी प्रकाशन
दिल्ली–110032

प्रकाशक : राधारानी प्रकाशन
29/61 गली नं.11, विश्वास नगर,
दिल्ली-110032

फोन : 2228285

© श्याम मोहन अस्थाना

शापग्रस्त

दृष्टिहीन–दिशाहीन

प्रथम संस्करण 1998

मूल्य : 60.00 रुपये

आवरण : विजेन्द्र सिंघल

लेज़र टाइपसेट : शिवम् ग्राफिक, दिल्ली-110032
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली-110032

SHAPGRAST By : Shyam Mohan Asthana Rs. 60.00

क्रम

शापग्रस्त 7

दृष्टिहीन–दिशाहीन 60

शापग्रस्त

पात्र

(१) राजा बेन
(२) राजपुरोहित
(३) भील राज
(४) विदूषक वातुल
(५) गंधर्व मुनि
(६) राजमाता सुनीता
(७) रानी मायावती
(८) भील युवती नेमा
(९) महर्षि अत्रि एवं मुनिगण
(१०) प्रतिहारी
(११) दो नागरिक
(१२) प्रेतों की टोली
(१३) दो चारण

शापपग्रस्त

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—राजा बेन का महल

समय—दिन का दूसरा पहर

(महामुनि अत्रि एवं छह मुनि पूजा एवं हवन में संलग्न हैं। बीच में हवन कुंड जल रहा है। राजा बेन एवं रानी मायावती समय-समय पर हवन-कुंड में हविष्य डालते हैं)

मुनिगण : ओमं अग्नये स्वाहा !
राजा/रानी : स्वाहा !
मुनिगण : ओम् सोमाय स्वाहा
राजा/रानी : स्वाहा !
मुनिगण : ओम् प्रजापतये स्वाहा !
राजा/रानी : स्वाहा !
मुनिगण : ओम् इंद्राय स्वाहा !
राजा/रानी : स्वाहा !
मुनिगण : ओम् आदित्याय स्वाहा !
राजा/रानी : स्वाहा !
मुनिगण : ओम् धन्वन्तरये स्वाहा !
राजा/रानी : स्वाहा !

मुनिगण : ओम् द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा !

राजा/रानी : स्वाहा !

मुनिगण : ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं
पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय,
पूर्णमेवावशिष्यते !
(सभी मुनि खड़े होते हैं)

मुनिगण : ओम शांति ! शांति ! शांति !

(राजा एवं रानी मुनियों का चरण-स्पर्श करते हैं ।

मुनिराज अत्रि : राजन्, तुम भगवान् की अनुपम संरचना हो । ईश्वर ने तुम्हें इंद्र सा सुन्दर और विष्णु सा तेजस्वी बनाया है । तुम अनन्त सुख और यश के भागी होंगे ।

बेन : पूज्यवर, यह सृष्टि आपकी है । मैं तो मात्र माध्यम हूं । गंगाजल से गंगा की अर्चना कर रहा हूं ।

(मुनिराज अत्रि एवं मुनियों का प्रस्थान) नेपथ्य से) परम चक्रवर्ती सजा बेन की जय !

परम धार्मिक राजा बेन की जय !

(दो चारणों का प्रवेश)

(चारण-पाठ)

राजन के राज, महाराज देस-देसन के,
धरम की धुरी या गुनन की खान हैं,
दिनन के सूरज या निशा के चंद्रमा,
दीनबंधु-शीलसिन्धु, दया की पहचान हैं,
कितना बखाने कवि, महिमा न जाने रवि,

नाथ ये अनाथन के कृपा के निधान हैं,
चकरवर्ती बेन राज, गा रहा सकल समाज
इंद्र के रूप या विष्णु सहसनाम हैं।

(राजा चारणों को पुरस्कार देता है)

(राजा एवं चारणों का प्रस्थान)

(विदूषक वातुल का प्रवेश)

विदूषक : परम चक्रवर्ती राजा बेन की जय ! परम मूर्ख विदूषक वातुल राज की जय !

रानी : आओ वातुल राज ! विदूषकों का संसार बहुत सुरक्षित होता है। जीवन की कोई समस्या उन्हें चिंतित नहीं करती। उनके एक ठहाके से ही मौसम बदल जाता है।

विदूषक : महारानी, रक्षा करें। विदूषक का जीवन घोर संकट में है। एक पूजा के बाद दूसरी पूजा... एक प्रवचन के बाद दूसरा प्रवचन...उसके साथ शंखनाद, घंटनाद, जयघोष !

रानी : वातुलराज, आज महाराजा का जन्मदिन है। नगर में अनेक समारोह आयोजित हैं। आनन्द की नदी बह रही है।

विदूषक : देवी, कोई भी 'आनन्द' अधिक होने पर 'ऊब' में बदल जाता है। आप स्वयं महाराज के चेहरे की ओर दृष्टिपात करें। क्या वहां वही उल्लास है जो जनता के जयघोषमें है। और देवी, जनता की जयजयकार में उत्साह कम, औपचारिकता अधिक है।

रानी : वातुलराज, तुमने जो कुछ कहा उसे समझ गयी। पर जो तुम कहना चाहते हो वह क्या है।

विदूषक : देवी, हम अवकाश की प्रार्थना लेकर आये हैं। पूर्णिमा की रात में शिकार का अपना आनन्द है हमें भीलराज का निमंत्रण भी मिला है।

रानी : भीलराज का निमंत्रण !

विदूषक : देवी, आज भील समाज का सबसे बड़ा पर्व है। इस अवसर पर भील युवक और युवतियां अपने जीवन-साथी का वरण करते हैं।

रानी : तो क्या वातुल राज एक जीवन-साथी की खोज में वन जा रहे हैं ?

विदूषक : महारानी की जय हो।
देवी, आर्शीवाद दीजिये कि सुकन्या का दर्शन हो। लगता है कि आकाश से फूल झर रहे हैं ! विदूषक वातुल राज के गले में स्वयम्वर की माला पड़ने ही वाली है।

(राजा बेन का प्रवेश)

बेन : बस-बस-बस ! विदूषक महोदय, आज इतना ही काफी है।

विदूषक : राजन्, महारानी ने मुझे विवाह का वर दिया है। मुझे घुंघरु की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ रही है। लोग मंगल गीत गा रहे हैं।

बेन : इतना ही काफी है। वातुल राज, इतना धैर्य खोने से काम नहीं बनेगा। (रानी से) देवी, वातुल के आग्रह पर वन में मृगया का कार्यक्रम बन गया है। भीलराज का निमंत्रण भी मिला है।

मायावती : लगता है कि जन्मदिन समारोह ने महाराज को बहुत थका दिया है।

विदूषक : सिर्फ तन नहीं, मन की भी थकान होती है।

मायावती : समारोह का ज्वार अभी थम नहीं पाया है। आर्यपुत्र की अनुपस्थिति अतिथियों को निराश करेगी।

बेन : अतिथियों को विशेष प्रतीक्षा नहीं करनी होगी। हम अर्धरात्रि के पूर्व ही वापस आ जायेंगे।

(बेन और विदूषक का प्रस्थान)

(नेपथ्य से जयघोष)

परम चक्रवर्ती राजा बेन की जय !

महान धार्मिक राजा बेन की जय।

(राजमाता सुनीता का प्रवेश)

मायावती : मातश्री को मायावती का प्रणाम !

(सुनीता प्रणाम को स्वीकार करती है)

सुनीता : पुत्री तुमने सुना ! पुत्र बेन के जन्मदिन पर राज्य के कोने-कोने में खुशियां मनायी जा रही हैं। ऋषि-कुल ने पुत्र बेन को सिहंसन पर प्रतिष्ठित कर उसकी प्रतिभा को स्वीकार किया था। आज धरती और आकाश पुत्र बेन के जयघोष से गूंज रहा है। सभी का कहना है कि राजा बेन इंद्र के समान सुन्दर और विष्णु के समान तेजस्वी है।

मायावती : मातश्री, यह सब कुछ आपके पुण्यों का ही प्रतिफल है।

सुनीता : पुत्र बेन को नहीं देख रही हूं।

मायावती : आर्यपुत्र विदूषक वातुल के साथ वन खंड की

ओर गये हैं। आज का दिन बहुत व्यस्त रहा। मातश्री, राजा को भी विश्राम की जरूरत होती है।

सुनीता : हां, जन्मदिन की गहमा-गहमी के बाद अवकाश आवयक था।

साथ में कौन-कौन है ?

मायावती : विदूषक वातुल राज और रक्षकों का एक दल।

सुनीता : कब तक लौटने की योजना है ?

मायावती : अर्धरात्रि तक लौटने का अनुमान है।

सुनीता : ठीक है। पुत्र से कल सुबह परामर्श करूंगी।

मायावती : मातश्री, क्या कोई विशेष प्रयोजन है !

सुनीता : कुछ विशेष नहीं है। राजगुरू के अनुसार पुत्र बेन पर विपरीत ग्रहों की छाया पड़ रही है। उसका निवारण आवश्यक है।

मायावती : मातश्री, हम दोनों कल सुबह आपकी सेवा में उपस्थित होंगे।

सुनीता : ठीक है, पुत्री। मैं राजगुरु से परामर्श करती हूं। भगवान् विष्णु की कृपा से सब कुछ कुशल होगा।

(राजमाता सुनीता का प्रस्थान)

(एक जोगी और जोगिन का प्रवेश)

(युगल गीत)

विधना ने बीनी, झीनी चदरिया,
रच-रच करे सिंगार गुजरिया,
बोल मोरे सुगना, कवन रंग चादर !
पोथी पढ़-पढ़ भये सयाने,
करमन की गति कोई न जाने,

सावन बरसे, सूखे भादर,
बोल मोरे सुगना, कवन रंग चादर ।
संत कहे जग, तेरा न मेरा,
धूप-छांह का लगता फेरा,
कौन देवता, कौन है पामर,
बोल मोरे सुगना, कवन रंग चादर ।
(मायावती जोगी-जोगिन को भिक्षा देती है)
(प्रकाश बुझता है ।)

पहला अंक

दूसरा दृश्य

स्थान—जंगल का एक खंड

समय—रत्रि पहला पहर

(राजा बेन एक शिलाखंड पर बैठा हुआ है । भील कन्या नेमा राजा को पंखा झल रही है ।

(नेपथ्य में भील संगीत के स्वर)

बेन : देवी नेमा, आकाश से अमृत बरस रहा है। पेड़ों के झुरमुट से संगीत की नदी बह रही है। लगता कि इस वन खंड के बीच एक स्वर्ग सांस ले रहा है ।

नेमा : महाराज, आज वसंत पूर्णिमा है। वह भील जाति का सबसे बड़ा उत्सव है । आज हम भगवान्

कामदेव की पूजा करते हैं। युवक-युवतियां एक-दूसरे का वरण करते हैं।

बेन : कितनी सुन्दर व्यवस्था है। हर पेड़ के नीचे एक स्वयम्वर है। हर डाल के पास एक विवाह-मंडप है। पूरा वनखंड एक सामूहिक उत्सव के उल्लास में सराबोर है।

नेमा : राजन्, भील युवक एवं युवतियां पूरे वर्ष इस उत्सव की प्रतीक्षा करते हैं। आज भावना, प्रेम और वासना की सभी सीमाएं टूट जाती हैं।

(विदूषक का प्रवेश)

विदूषक : राजन्, शिकार के पशु रथ पर रख दिये गये हैं। सुनहरा मृग तीरों से घायल होकर भी नदी को लांघ गया। उसे लाने का कोई साधन नहीं है।

बेन : स्वर्ण मृग बहुमूल्य है। आश्चर्य है कि घायल मृग नदी पार कर गया। दूसरा आश्चर्य यह है कि उसी नदी के किनारे वातुल राज निरुपाय खड़ा है।

विदूषक : राजन्, नदी बहुत क्रोध में है। उसके प्रवाह में सिंह की गर्जना सुनाई पड़ती है। सबसे बड़ी बात है कि वातुल राज अभी अविवाहित है। वह आत्महत्या को उत्सुक नहीं है।

बेन : नहीं-नहीं, आत्महत्या की जरूरत नहीं है। वातुल राज स्वर्ण मृग से अधिक मूल्यवान है। उसकी आत्महत्या से एक अनाम नारी का भविष्य अंधकार में पड़ जायेगा।

(सब हंसते हैं)

(भीलराज का प्रवेश)

भीलराज : महाराज, लगता है कि भील युवक स्वर्ण मृग ले आये । उसे रथ पर संभाल कर रख दिया गया है ।

बेन : कहां हैं वे भील युवक ! उन्हें साहस के लिये पुरस्कार मिलना चाहिये ।

भीलराज : महाराज, आपकी सेवा हमारा पावन कर्तव्य है । पुरस्कार की कोई जरूरत नहीं है ।

बेन : आपके आतिथ्य ने हमें संकोच में डाल दिया है । कुमारी नेमा ने हम लोगो की अपूर्व सेवा की है ।

बेन : भील-शिरोमणि, यहां सब कुछ दिव्य है । हमें अनन्त सुख मिला है ।

(नेपथ्य से शंख और घण्टे का स्वर)

भीलराज : महाराज, लगता है कि भगवान् कामदेव की पूजा संपन्न हो गयी । मैं प्रसाद लेकर आता हूं ।

(भीलराज का प्रस्थान)

(मंच पर हल्का अंधेरा । काले वेश और मुखौटों के साथ चार प्रेतों का प्रवेश)

प्रेत : लृंग-कृंग, लृंग-कृंग, हू-हा, हू-हा !

(प्रेत मंच के कई चक्कर लगाते हैं)

(प्रेतों का प्रस्थान)

(पूरा प्रकाश)

विदूषक : महाराज रक्षा करें । यमराज के दूतों ने वन को घेर लिया है । ये हमारी हत्या करना चाहते हैं !

बेन : कौन हैं, ये लोग ! ये सचमुच नरक के प्राणी लगते हैं ।

नेमा : महाराज, चिन्ता न करें। इस उत्सव में भील युवक अपनी प्रेमिकाओं को प्रसन्न करने के लिये मुखौटा लगाकर घूमते हैं।

बेन : यह भील युवकों का दुस्साहस है। उन्हें अपने अतिथियों की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये।

नेमा : राजन्, क्षमा करें। वन प्रदेश के युवक नगर के रीत-रिवाजों से अपरिचित होते हैं।

(मदिरा का पात्र लेकर भीलराज का प्रवेश)

भीलराज : नेमा बेटी, यह पूजा का प्रसाद है। महाराज और अन्य अतिथियों के बीच इसका वितरण करो।

बेन : भीलराज, यह क्या मदिरा का पात्र है ?

भीलराज : महाराज, यह उच्चतम कोटि की मदिरा है। यह देवताओं को भी दुर्लभ है।

विदूषक : देवताओं को भी दुर्लभ ! भीलराज तुम धन्य हो !

बेन : वातुल राज, मदिरा का नाम सुनते ही उठ बैठे। क्या प्रेतों का भय दूर हो गया ?

विदूषक : हुंह, प्रेतों से कौन डरता है ! देवी, अब विलम्ब न करें। हम देवता का प्रसाद पाने के लिये अत्यन्त अधीर हैं।

(भील राज का प्रस्थान)

(नेपथ्य से भील संगीत के स्वर)

(नेमा मदिरा का वितरण करती है)

विदूषक : (पीते हुए) धन्य हैं, देवी। यह सचमुच देवताओं के योग्य है।

बेन : एक घूंट ने सब कुछ बदल दिया है। लगता है कि मैं आकाश-गंगा में विहार कर रहा हूं। देवी

बेन : आश्चर्य है ! कुछ समझ में नहीं आता ।

नेमा : महाराज, लगता है कि हम किसी माया जाल में उलझते जा रहे हैं ।

बेन : देवी, भय की कोई बात नहीं है । इन लोगों ने अपना परिचय दे दिया है । ये लोग स्वर्ग या नरक से आये हों, हमें कोई हानि नहीं पहुंचा सकते । ये फिलहाल साथ बैठ कर दो घूंट मदिरा पीना चाहते हैं ।

पहला प्रेत : महाराज, हमारे पात्र अभी तक खाली हैं ।

बेन : देवी, भगवान् के प्रसाद का वितरण करो !

नेमा : बापू ने आपकी सेवा का भार मुझे दिया है । मैं आपके आदेश मानने को बाध्य हूं ।

(नेमा मदिरा का वितरण करती है)

(नेपथ्य से लोक संगीत के स्वर)

नेमा : उत्सव का ज्वार चढ़ता जा रहा है । भील युवक और युवतियां पागलों की तरह नृत्य कर रहे हैं ।

बेनी : देवी, नहीं-नहीं....सुन्दरी, अब मैं और औपचरिकता नहीं बरत सकता । हमारे-तुम्हारे बीच सब कुछ बदल गया है । नेमा रानी, हम सब तुम्हारे नृत्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

नेमा : महाराज, यह आप क्या कह रहे हैं !

बेन : सुन्दरी, समाज हमें अनेक मुखौटे देता है । इन्हें हम समय-समय पर लगा लेते हैं । इन मुखौटों को लगा कर हम अपना मूल चरित्र भूल जाते हैं ।

नेमा : महाराज, पता नहीं आप क्या कह रहे हैं । मुखौटा बदलने से हमारा चरित्र कैसे बदल सकता है ।

नेमा : महाराज, चिन्ता न करें। इस उत्सव में भील युवक अपनी प्रेमिकाओं को प्रसन्न करने के लिये मुखौटा लगाकर घूमते हैं।

बेन : यह भील युवकों का दुस्साहस है। उन्हें अपने अतिथियों की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये।

नेमा : राजन्, क्षमा करें। वन प्रदेश के युवक नगर के रीत-रिवाजों से अपरिचित होते हैं।

(मदिरा का पात्र लेकर भीलराज का प्रवेश)

भीलराज : नेमा बेटी, यह पूजा का प्रसाद है। महाराज और अन्य अतिथियों के बीच इसका वितरण करो।

बेन : भीलराज, यह क्या मदिरा का पात्र है ?

भीलराज : महाराज, यह उच्चतम कोटि की मदिरा है। यह देवताओं को भी दुर्लभ है।

विदूषक : देवताओं को भी दुर्लभ ! भीलराज तुम धन्य हो !

बेन : वातुल राज, मदिरा का नाम सुनते ही उठ बैठे। क्या प्रेतों का भय दूर हो गया ?

विदूषक : हुंह, प्रेतों से कौन डरता है ! देवी, अब विलम्ब न करें। हम देवता का प्रसाद पाने के लिये अत्यन्त अधीर हैं।

(भील राज का प्रस्थान)

(नेपथ्य से भील संगीत के स्वर)

(नेमा मदिरा का वितरण करती है)

विदूषक : (पीते हुए) धन्य हैं, देवी। यह सचमुच देवताओं के योग्य है।

बेन : एक घूंट ने सब कुछ बदल दिया है। लगता है कि मैं आकाश-गंगा में विहार कर रहा हूं। देवी

बेन : आश्चर्य है ! कुछ समझ में नहीं आता ।

नेमा : महाराज, लगता है कि हम किसी माया जाल में उलझते जा रहे हैं ।

बेन : देवी, भय की कोई बात नहीं है । इन लोगों ने अपना परिचय दे दिया है । ये लोग स्वर्ग या नरक से आये हों, हमें कोई हानि नहीं पहुंचा सकते । ये फिलहाल साथ बैठ कर दो घूंट मदिरा पीना चाहते हैं ।

पहला प्रेत : महाराज, हमारे पात्र अभी तक खाली हैं ।

बेन : देवी, भगवान् के प्रसाद का वितरण करो !

नेमा : बापू ने आपकी सेवा का भार मुझे दिया है । मैं आपके आदेश मानने को वाध्य हूं ।

(नेमा मदिरा का वितरण करती है)

(नेपथ्य से लोक संगीत के स्वर)

नेमा : उत्सव का ज्वार चढ़ता जा रहा है । भील युवक और युवतियां पागलों की तरह नृत्य कर रहे हैं ।

बेनी : देवी, नहीं-नहीं....सुन्दरी, अब मैं और औपचरिकता नहीं बरत सकता । हमारे-तुम्हारे बीच सब कुछ बदल गया है । नेमा रानी, हम सब तुम्हारे नृत्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

नेमा : महाराज, यह आप क्या कह रहे हैं !

बेन : सुन्दरी, समाज हमें अनेक मुखौटे देता है । इन्हें हम समय-समय पर लगा लेते हैं । इन मुखौटों को लगा कर हम अपना मूल चरित्र भूल जाते हैं ।

नेमा : महाराज, पता नहीं आप क्या कह रहे हैं । मुखौटा बदलने से हमारा चरित्र कैसे बदल सकता है ।

बेन : नेमा रानी, राजधानी में मैं राजा का मुखौटा पहनता हूं–गंभीर और गरिमा से बोझिल ! यहां जंगल में मैंने एक सम्मानित अतिथि का मुखौटा पहन रखा है । पर इन सबके पीछे बैठा है एक उछृंखल युवक, जो तुम जैसी अपरूप रूपसी के साथ रास रचाना चाहता है ।

नेमा : महाराज, आप हमारे सम्मानित अतिथि हैं । आपको मर्यादा की सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिये ।

बेन : (अट्टहास) सम्मान ! मर्यादा ! सब झूठ है ! सब झूठ है !

(नेपथ्य से प्रेतों का अट्टहास)

(सामूकि स्वर) सब झूठ है ! सब झूठ है !

बेन : नाचो सुन्दरी नाचो ।

(नैपथ्य से लोक संगीत से स्वर)

(कुछ भील कन्याओं का प्रवेश)

एक भील कन्या : नेमा रानी, हम आम्र कुंज में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

बेन : भील कन्याओं, हम भी तुम्हारी नृत्य के लोभी दर्शक हैं । हमारी उपेक्षा मत करो । मैं तुम सबको स्वर्ण आभूषणों से लाद दूंगा ।

दूसरी भील कन्या : महाराज, आज की संध्या नृत्य-संध्या है । स्वर्ण -आभूषणों की कोई जरूरत नहीं है ।

(भील कन्याएं तेज नृत्य करती हैं)

(प्रेतों का प्रवेश)

(प्रेत नृत्य की गति पर अपने ढंग का नृत्य प्रस्तुत करते हैं)

पशुओं पर भले दया करना पर वनवासियों को कोई छूट न देना ।

सैनिक : जो आज्ञा महाराज !

(सैनिकों का प्रस्थान)

भीलराज : सर्वनाश ! नेमा बेटी, मैं जा रहा हूं । उत्सव में डूबे भीलों को सूचना देना है । संभव हो तो अपनी रक्षा करना ।

(नेपथ्य में घोषणा) सुनो ! सुनो ! सुनो ! जंगल में भयानक आग लग गयी है । सावधान ! अपने जान-माल से सावधान !

(सैनिक जलती हुई लुआठी लेकर विपरीत दिशाओं में दौड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं)

बेन : नेमा रानी, अब विरोध की बात व्यर्थ है । तुम अपनी इच्छा से मेरे साथ चलो ।

नेमा : महाराज, यह अनुचित है ! बिलकुल अनुचित है ।

बेन : जंगल की आग पेड़ों पर लाल फूल खिला रही है । लाल-लाल अंगारों के इस स्वर्ण-मंडप के नीचे एक और स्वंयम्बर रचा जा रहा है । यह एक अनूठी सुहाग संध्या होगी । चलो, सुन्दरी, चलो !

(बेन नेमा को खींचते हुए ले जाता है ।)

(प्रकाश बुझता है)

बेन : नेमा रानी, राजधानी में मैं राजा का मुखौटा पहनता हूं–गंभीर और गरिमा से बोझिल ! यहां जंगल में मैंने एक सम्मानित अतिथि का मुखौटा पहन रखा है। पर इन सबके पीछे बैठा है एक उछृंखल युवक, जो तुम जैसी अपरूप रूपसी के साथ रास रचाना चाहता है।

नेमा : महाराज, आप हमारे सम्मानित अतिथि हैं। आपको मर्यादा की सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिये।

बेन : (अट्टहास) सम्मान ! मर्यादा ! सब झूठ है ! सब झूठ है !

(नेपथ्य से प्रेतों का अट्टहास)

(सामूकि स्वर) सब झूठ है ! सब झूठ है !

बेन : नाचो सुन्दरी नाचो।

(नैपथ्य से लोक संगीत से स्वर)

(कुछ भील कन्याओं का प्रवेश)

एक भील कन्या : नेमा रानी, हम आम्र कुंज में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बेन : भील कन्याओं, हम भी तुम्हारी नृत्य के लोभी दर्शक हैं। हमारी उपेक्षा मत करो। मैं तुम सबको स्वर्ण आभूषणों से लाद दूंगा।

दूसरी भील कन्या : महाराज, आज की संध्या नृत्य-संध्या है। स्वर्ण -आभूषणों की कोई जरूरत नहीं है।

(भील कन्याएं तेज नृत्य करती हैं)

(प्रेतों का प्रवेश)

(प्रेत नृत्य की गति पर अपने ढंग का नृत्य प्रस्तुत करते हैं)

पशुओं पर भले दया करना पर वनवासियों को कोई छूट न देना ।

सैनिक : जो आज्ञा महाराज !

(सैनिकों का प्रस्थान)

भीलराज : सर्वनाश ! नेमा बेटी, मैं जा रहा हूं । उत्सव में डूबे भीलों को सूचना देना है । संभव हो तो अपनी रक्षा करना ।

(नेपथ्य में घोषणा) सुनो ! सुनो ! सुनो ! जंगल में भयानक आग लग गयी है । सावधान ! अपने जान-माल से सावधान !

(सैनिक जलती हुई लुआठी लेकर विपरीत दिशाओं में दौड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं)

बेंन : नेमा रानी, अब विरोध की बात व्यर्थ है । तुम अपनी इच्छा से मेरे साथ चलो ।

नेमा : महाराज, यह अनुचित है ! बिलकुल अनुचित है ।

बेन : जंगल की आग पेड़ों पर लाल फूल खिला रही है । लाल-लाल अंगारों के इस स्वर्ण-मंडप के नीचे एक और स्वंयम्बर रचा जा रहा है । यह एक अनूठी सुहाग संध्या होगी । चलो, सुन्दरी, चलो !

(बेन नेमा को खींचते हुए ले जाता है ।)

(प्रकाश बुझता है)

पहला अंक
तीसरा दृश्य
स्थान–राजा बेन का महल
समय–रात्रि का तीसरा पहर

(महल के बाहर रानी मायावती बेचैन सी टहल रही हैं)

(नेपथ्य में शोर)

(सामूहिक स्वर) राजरानी रक्षा करो ! राजरानी न्याय दो !

(मायावती घंटा बजाती है)

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : देवी, क्या आज्ञा है ?

मायावती : प्रतिहारी, अभी-अभी एक सामूहिक पुकार सुनाई पड़ी थी। लगता है कि कोई दुर्घटना घटित हुई है। पता लगाओ कि गुहार करने वाले लोग कौन हैं।

प्रतिहारी : देवी, वनखंड से भीलराज और उनके साथी महल के द्वार पर उपस्थित हैं। वे अत्यन्त अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। लगता है कि अधिक मदिरा पान से उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है।

मायावती : उन्हें सुने बिना निर्णय देना अनुचित होगा। उन्होंने न्याय की पुकार की है। उन्हें न्याय पाने का अधिकार है।

प्रतिहारी : जैसी आज्ञा, देवी।

(प्रतिहारी का प्रस्थान)

मायावती : भीलराज, न्याय के देवता निर्मम होते हैं। उनके निर्णय अत्यन्त कठोर होते हैं।

(घोड़े के टाप की आवाज)

भीलराज : देवी, राजपथ पर घोड़े की टाप सुनाई पड़ रही है। महाराज की टोली आया ही चाहती है। हमें जाना ही होगा। पर देवी, आज राज-न्याय की कठोर परीक्षा है।

मायावती : राजा को भी प्रजा के साथ अकारण दुर्व्यवार करने का अधिकार नहीं हैं। भीलराज, तुम्हें न्याय मिलेगा। मैं अपने अजन्मे शिशु की शपथ लेकर यह घोषणा कर रही हूं।

(भीलराज का प्रस्थान)

(राजा बेन और कुमारी नेमा का प्रवेश)

मायावती : आर्यपुत्र का स्वागत है। चेहरे पर चिन्ता और तनाव के चिह्न हैं। क्या कोई दुर्घटना घटित हुई है।

बेन : देवी, कभी-कभी सत्ता को आकस्मिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पर हमने उनका उचित उत्तर दे दिया है।

मायावती : आयपुत्र, आपके शौर्य के सम्मुख मनुष्य तो क्या देवता भी नहीं ठहर सकते।

बेन : देवी, तुम्हारे लिये एक शुभ संवाद है। मैं वनखंड से तुम्हारे लिये एक सहेली लाया हूं। यह है भीलराज की सुन्दरी कन्या, नेमा। यह हमारे परिवार की नयी सदस्या होगी।

मायावती : आर्यपुत्र, कुमारी नेमा का सहर्ष स्वागत है।

बेन : देवी, कुमारी नेमा, सिर्फ तन से ही नहीं, मन से

पहला अंक
तीसरा दृश्य
स्थान—राजा बेन का महल
समय—रात्रि का तीसरा पहर

(महल के बाहर रानी मायावती बेचैन सी टहल रही हैं)

(नेपथ्य में शोर)

(सामूहिक स्वर) राजरानी रक्षा करो ! राजरानी न्याय दो !

(मायावती घंटा बजाती है)

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : देवी, क्या आज्ञा है ?

मायावती : प्रतिहारी, अभी-अभी एक सामूहिक पुकार सुनाई पड़ी थी। लगता है कि कोई दुर्घटना घटित हुई है। पता लगाओ कि गुहार करने वाले लोग कौन हैं।

प्रतिहारी : देवी, वनखंड से भीलराज और उनके साथी महल के द्वार पर उपस्थित हैं। वे अत्यन्त अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। लगता है कि अधिक मदिरा पान से उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है।

मायावती : उन्हें सुने बिना निर्णय देना अनुचित होगा। उन्होंने न्याय की पुकार की है। उन्हें न्याय पाने का अधिकार है।

प्रतिहारी : जैसी आज्ञा, देवी।

(प्रतिहारी का प्रस्थान)

मायावती : भीलराज, न्याय के देवता निर्मम होते हैं। उनके निर्णय अत्यन्त कठोर होते हैं।

(घोड़े के टाप की आवाज)

भीलराज : देवी, राजपथ पर घोड़े की टाप सुनाई पड़ रही है। महाराज की टोली आया ही चाहती है। हमें जाना ही होगा। पर देवी, आज राज-न्याय की कठोर परीक्षा है।

मायावती : राजा को भी प्रजा के साथ अकारण दुर्व्यवार करने का अधिकार नहीं हैं। भीलराज, तुम्हें न्याय मिलेगा। मैं अपने अजन्मे शिशु की शपथ लेकर यह घोषणा कर रही हूं।

(भीलराज का प्रस्थान)

(राजा बेन और कुमारी नेमा का प्रवेश)

मायावती : आर्यपुत्र का स्वागत है। चेहरे पर चिन्ता और तनाव के चिह्न हैं। क्या कोई दुर्घटना घटित हुई है।

बेन : देवी, कभी-कभी सत्ता को आकस्मिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पर हमने उनका उचित उत्तर दे दिया है।

मायावती : आयपुत्र, आपके शौर्य के सम्मुख मनुष्य तो क्या देवता भी नहीं ठहर सकते।

बेन : देवी, तुम्हारे लिये एक शुभ संवाद है। मैं वनखंड से तुम्हारे लिये एक सहेली लाया हूं। यह है भीलराज की सुन्दरी कन्या, नेमा। यह हमारे परिवार की नयी सदस्या होगी।

मायावती : आर्यपुत्र, कुमारी नेमा का सहर्ष स्वागत है।

बेन : देवी, कुमारी नेमा, सिर्फ तन से ही नहीं, मन से

भी बहुत सुन्दर हैं ।

मायावती : आर्यपुत्र, कुमारी नेमा के बारे में एक प्रश्न बच जाता है । हमारी नयी सहेली के साथ आपके संबन्थों का क्या स्वरूप होगा ?

बेन : देवी, वनकन्या के साथ मेरा वही संबन्ध होगा जो एक युवा पुरुष और युवा स्त्री के बीच होता है। कुमारी नेमा हमारे बीच नया सुख जोड़ेगी ।

मायावती : आर्यपुत्र, ऐसे संबन्ध बहुधा नये दुःख को जन्म देते हैं ।

बेन : देवी, इस संबन्थ की रचना स्वयं विधाता ने की है । इस पर अब विचार करना व्यर्थ है ।

मायावती : लेकिन आर्यपुत्र ...!

बेन : वनखंड की घटनाओं ने मुझे बुरी तरह थका दिया है । अब मैं विश्राम करना चाहता हूं । देवी, कुमारी नेमा अब तुम्हारे संरक्षण में हैं । आशा है कि उसे स्नेह मिलेगा ।

(बेन का प्रस्थान)

नेमा : महारानी के चरणों में दासी नेमा का प्रणाम ।

मायावती : बहन, तुम दासी नहीं, महाराज की प्रेयसी हो । आर्यपुत्र ने तुम्हें परिवार में पत्नी का सम्मान दिया है ।

नेमा : पता नहीं, यह सम्मान है या अपमान ! रानी मां, मैं तुम्हारी पुत्री की जैसी हूं। इसके अतिरिक्त कुछ संभव नहीं है ।

मायावती : घटनाओं का अपना तर्क होता है । उन्हें समझना आसान नहीं है ।

नेमा : रानी मां, मैं सचमुच कुछ समझ नहीं पा रही हूं।

राजगुरु : राजा भी धर्म से परे नहीं होता। जहां धर्म का प्रश्न हो, राजगुरु का निर्णय सर्वोपरि होता है।

बेन : राजगुरु, आपसे सहमत होना कठिन है। राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है। यह व्यवस्था स्वयं भगवान् मनु ने बनाई थी।

राजगुरु : राजन्, भगवान् भी धर्म की परिधि से परे नहीं है। जहां तक राजा का प्रश्न है उसके अधिकार और कर्तव्य बहुत स्पष्ट हैं।

बेन : क्षमा करें गुरुदेव, राजा के बारे में आपके विचार मुझे मान्य नहीं हैं। इस विवाद की पृष्ठभूमि में मैं अब स्पष्ट निर्देश दे रहा हूं। सुनो सभी प्रजागण!

मैं अंग देश का राजा बेन घोषित करता हूं कि आज की तिथि से सभी राजकार्यों में राजा का स्थान सर्वोपरि होगा। कोई भी धर्मगरु या धर्माचार्य राजा के आदेशों का खंडन या उल्लंघन नहीं कर सकेगा।

राजगुरु : राजन्, तुम्हारा यह निर्णय अत्यन्त दुखद है। जहां धर्म की सीमाएं खत्म होती हैं, वहीं पाप की शुरूआत होती है।

(बेन घंटा बजाता है)

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : जो आज्ञा, देव!

बेन : सेनाध्यक्ष को संवाद दो कि सेना की टुकड़ियां तत्काल चारों दिशाओं में भेजी जाय। भोर से पहले भीलकन्या को बंदी बनाकर प्रस्तुत किया जाय।

भी बहुत सुन्दर हैं ।

मायावती : आर्यपुत्र, कुमारी नेमा के बारे में एक प्रश्न बच जाता है । हमारी नयी सहेली के साथ आपके संबन्थों का क्या स्वरूप होगा ?

बेन : देवी, वनकन्या के साथ मेरा वही संबन्ध होगा जो एक युवा पुरुष और युवा स्त्री के बीच होता है। कुमारी नेमा हमारे बीच नया सुख जोड़ेगी ।

मायावती : आर्यपुत्र, ऐसे संबन्ध बहुधा नये दुःख को जन्म देते हैं ।

बेन : देवी, इस संबन्थ की रचना स्वयं विधाता ने की है । इस पर अब विचार करना व्यर्थ है ।

मायावती : लेकिन आर्यपुत्र ...!

बेन : वनखंड की घटनाओं ने मुझे बुरी तरह थका दिया है। अब मैं विश्राम करना चाहता हूं। देवी, कुमारी नेमा अब तुम्हारे संरक्षण में हैं। आशा है कि उसे स्नेह मिलेगा ।

(बेन का प्रस्थान)

नेमा : महारानी के चरणों में दासी नेमा का प्रणाम ।

मायावती : बहन, तुम दासी नहीं, महाराज की प्रेयसी हो । आर्यपुत्र ने तुम्हें परिवार में पत्नी का सम्मान दिया है ।

नेमा : पता नहीं, यह सम्मान है या अपमान ! रानी मां, मैं तुम्हारी पुत्री की जैसी हूं। इसके अतिरिक्त कुछ संभव नहीं है ।

मायावती : घटनाओं का अपना तर्क होता है। उन्हें समझना आसान नहीं है ।

नेमा : रानी मां, मैं सचमुच कुछ समझ नहीं पा रही हूं।

राजगुरु : राजा भी धर्म से परे नहीं होता । जहां धर्म का प्रश्न हो, राजगुरु का निर्णय सर्वोपरि होता है ।

बेन : राजगुरु, आपसे सहमत होना कठिन है । राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है । यह व्यवस्था स्वयं भगवान् मनु ने बनाई थी ।

राजगुरु : राजन्, भगवान् भी धर्म की परिधि से परे नहीं है । जहां तक राजा का प्रश्न है उसके अधिकार और कर्तव्य बहुत स्पष्ट हैं ।

बेन : क्षमा करें गुरुदेव, राजा के बारे में आपके विचार मुझे मान्य नहीं हैं । इस विवाद की पृष्ठभूमि में मैं अब स्पष्ट निर्देश दे रहा हूं । सुनो सभी प्रजागण !

मैं अंग देश का राजा बेन घोषित करता हूं कि आज की तिथि से सभी राजकार्यों में राजा का स्थान सर्वोपरि होगा । कोई भी धर्मगरु या धर्माचार्य राजा के आदेशों का खंडन या उल्लंघन नहीं कर सकेगा ।

राजगुरु : राजन्, तुम्हारा यह निर्णय अत्यन्त दुखद है । जहां धर्म की सीमाएं खत्म होती हैं, वहीं पाप की शुरूआत होती है ।

(बेन घंटा बजाता है)

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी : जो आज्ञा, देव !

बेन : सेनाध्यक्ष को संवाद दो कि सेना की टुकड़ियां तत्काल चारों दिशाओं में भेजी जाय । भोर से पहले भीलकन्या को वंदी बनाकर प्रस्तुत किया जाय ।

प्रतिहारी : राजन्, हमने देवी नेमा को एक भील युवक के साथ घोड़े पर जाते देखा है। उन्होंने अब तक राज्य की सीमा को पार कर लिया होगा।

बेन : ठीक है! अभी वनखंड जला है! कल सब कुछ जलेगा ! सब कुछ !

(बेन, राजगुरु का प्रस्थान)

(प्रतिहारी का प्रस्थान)

(गीत)

विधना ने बीती बीनी-झीनी चदरिया !
रच-रच करे सिंगार गुजरिया,
बोल मोरे सुगना
कवन रंग चादर ।
कोई न जाने करम डगरिया,
जाल में फंस गयी भोली मछरिया,
मछुआ मगन मन, रोये सागर !
बोल मोरे सुगना,
कवन रंग चदर !
नदिया से चुनते हीरा-मोती,
कभी मैं हंसता, कभी वह रोती,
हाथ में हीरा, लोग कहें पाथर
बोल मोरे सुगना,
कवन रंग चदर ।

(जोगी और जोगिन का प्रस्थान)

(प्रकाश बुझता है)

पहला अंक
चौथा दृश्य
स्थान—राजगुरु की कुटिया।
समय—कुछ दिन बाद

(दो उद्घोषकों का प्रवेश)

पहला उद्घोषक : (डुग्गी बजाते हुए)
सुनो ! सुनो ! सुनो !
अंग देश के महान पराक्रमी, चक्रवर्ती राजा बेन ने देश की जनता के चतुर्दिक कल्याण के लिये कुछ आदेशा जारी किये हैं। इन नियमों की उद्घोषणा से पिछले सभी नियम या व्यवस्थाएं अंतिम रूप से समाप्त समझी जायें।

दूसरा उद्घोषक : (डुग्गी बजाते हुए)
सुनो ! सुनो ! सुनो !
सभी धर्माचार्य सुनें !
सभी प्राचीन शास्त्रों एवं शास्त्रकारों के अनुसार राजा ईश्वर का प्रतिनिधि एवं धर्म का संरक्षक होता है। इस पवित्र मान्यता को कार्यरूप देने के लिये आदेश दिया जाता है कि—

(१) प्रत्येक देवालय में देवता के समकक्ष राजा की मूर्ति स्थापित की जाय।

(२) प्रत्येक यज्ञ में राजा को देवताओं के साथ यज्ञ-भाग अर्पित किया जाय।

(३) धर्माचार्यों को आदेश दिया जाता है कि राजा को

केन्द्र में रखकर शीघ्रातिशीघ्र एक पुराण की रचना करें ।

पहला उद्घोषक : सुने ! सुनो ! सुनो ! सभी व्यापारी सुनें ! राज्य के आर्थिक विकास के लिये राजा ने कुछ नये आदेश दिये हैं ।

(१) सभी व्यापारियों को आदेश है कि अपने व्यापार के लाभ का आधा भाग राज्य को कर के रूप में दें ।

(२) किसी भी नागरिक के निधन पर उसकी संपत्ति का आधा भाग तत्काल राज्य को प्राप्त होगा ।

दूसरा उद्घोषक : सुनो, सुनो, सुनो !

(१) हरेक परिवार में राजा की मूर्ति या चित्र का रखना अनिवार्य होगा ।

(२) राज्य के प्रत्येक नागरिक के लिये सुबह राजा की वंदना का गायन अनिवार्य होगा ।

पहला उद्घोषक : सुनो, सुनो, सुनो ! नगर के सभी युवक-युवतियां सुनें !

(१) विवाह की सभी पद्धतियों के बीच गंधर्व विवाह को सर्वश्रेष्ठ माना जायेगा । माता-पिता या अभिभावक इस व्यवस्था का विरोध नहीं कर सकेंगे ।

(२) पागुन-पूर्णिमा के अवसर पर पूरे राज्य में कामोत्सव मनाया जायेगा । उस दिन सभी युवक एवं युवतियों को अपना जीवन-साथी चुनने की स्वतंत्रता होगी ।

पहला उद्घोषक : सुनो, सुनो, सुनो ! राजा के किसी उल्लंघन पर

प्राण दंड दिया जायेगा । सुनो ! सुनो ! सुनो !

(राजगुरु का प्रवेश)

राजगुरु : कितने दुख की बात है । सुनो राजा बेन, तुम्हारे इन आदेशों को कोई धर्माचार्य स्वीकार नहीं करेगा । यह धर्म नहीं, अधर्म की व्यवस्था है । एक राक्षस-राज की शुरूआत है ।

(उदाघोषकों का प्रस्थान)

(नेपथ्य में शोर) राजगुरु रक्षा करो ! धर्मगुरु रक्षा करो !

(दो नागरिकों का प्रवेश)

पहला : राजगुरु, हम आपके द्वार पर रक्षा की गुहार लेकर आये हैं ।

राजगुरु : कौन हो तुम ? तुम्हें किससे भय है ?

दूसरा : पूज्यवर, हम नगर की जनत के प्रतिनिधि हैं । राजा का व्यवहार दिनोदिन अन्यायपूर्ण होता जा रहा है । पता नहीं, राजा इतना उग्र और अहंकारी क्यों हो गया है ।

पहला : राजगुरु, राजा के बढ़ते हुए अत्याचार से पूरी जनता त्राहि-त्राहि कर रही है ।

दूसरा : आपने नयी राजकीय घोषणाएं सुनी हैं ! यह कोई व्यवस्था नहीं, हमारे लिये मृत्यु का संदेश है ।

राजगुरु : नगर-वासियो, मैंने सब कुछ सुना है । पर नागरिकों की रक्षा और न्याय का दायित्व राजा बेन पर है । तुम्हारी शिकायतें उचित ही लगती हैं । तुम्हें राजा के पास जाना चाहिये ।

पहला : राजगुरु, राजा से अब मिलना सुगम नहीं है । हमें छोटे-छोटे कार्यों के लिये सेना के अधिकारियों की

खुशामद करनी पड़ती है। वे हरेक कार्य के लिये स्वर्ण-मुद्राएं मांगते हैं।

दूसरा : गुरुदेव, राजा की शिकायत करना हमें अच्छा नहीं लग रहा है। पर राजा को अब हमारे दुख-सुख की कोई चिन्ता नहीं है। हमारी व्यथा-कथा सुनने के लिये उनके पास समय ही नहीं है।

राजगुरु : बड़े दुख की बात है।

पहला : राजगुरु, राज्य के पुराने नियम अब बिल्कुल उपेक्षित हो गये हैं। भ्रष्टाचार एक भयानक रोग की तरह फैलता जा रहा है। नागरिकों का जीवन और सम्मान पूरी तरह से अरक्षित हो गया है।

दूसरा : राजा ने शायद किसी दिन क्रोध में कहा था कि अब अधर्म ही धर्म होगा और धर्म होगा अधर्म। यह शाप अब साकार हो गया है। अधर्म और अव्यवस्था के इसी दंश से सब कराह रहे हैं।

राजगुरु : सभी दिन ऐसा नहीं था। पता नहीं, राजा को क्या हो गया है।

पहला : लोगों का कहना है कि एक वनकन्या के अस्वीकार से राजा इतना क्रुद्ध और उग्र हो गया है।

दूसरा : विद्वानों का मत है कि लंका की लड़ाई एक नारी के सम्मान के लिये लड़ी गयी थी। महाभारत के युद्ध के पीछे भी एक नारी थी।

पहला : अगर यही स्थिति रही तो एक और महाभारत होकर रहेगा। इस युद्ध में एक ओर राजा, दूसरी ओर पूरी जनता होगी।

राजगुरू : नगर-वासियो, परिस्थिति बहुत जटिल है । मैं राजा से इस विषय में परामर्श करूंगा ।

(राजा बेन का प्रवेश)

बेन : राजगुरु, राजा बेन स्वयं आपके आदेशों के लिये प्रस्तुत हैं !

(नागरिकों का प्रस्थान)

राजगुरू : राजन्, मैंने आदेश देने की बात नहीं कही है । ये नगर के दुखी लोग हैं । अभी अपने दुख-सुख की चर्चा कर रहे थे ।

बेन : राजगुरू, राजा और प्रजा का संबन्ध बहुत पवित्र होता है । आपकी चर्चाएं इन संबंधों में अनुचित हस्तक्षेप हैं । यह व्यथा-कथा नहीं, विरोध और विद्रोह का स्वर है । इन लोगों ने राज्यसत्ता को अपमानित किया है ।

राजगुरू : राजन्, कभी-कभी कटु सत्य बोलना आवश्यक हो जाता है । सच यह है कि इस राज्य में राजा और प्रजा के संबंध पूर्णतया भंग हो गये हैं । अधर्म और अराजकता का दानव धीरे-धीरे सब कुछ निगलता जा रहा है ।

बेन : राजगुरू, किसी राज्य में सत्ता के दो केन्द्र नहीं हो सकते । आपके अनुचित जन-प्रेम से प्रशासन बाधित हो रहा है ।

राजगुरू : राजन्, राजगुरू न सही, एक प्रबुद्ध नागरिक की हैसियत से अन्याय का विरोध करना मेरा धर्म है ।

बेन : राजगुरू, आपकी मूल पहचान एक धर्माचार्य की

है। ये सारे लोग एक धर्माचार्य के साथ मिलकर एक विरोध-केन्द्र की रचना कर रहे हैं।

राजगुरू : राजन्, यह आक्षेप अनुचित है।

बेन : राजगुरु, आपने ठीक कहा था कि कभी-कभी कटु सत्य बोलना जरूरी हो जाता है। अतः सुने सभी लोग !

मैं अंग देश का राजा बेन राज्य में एक नयी व्यवस्था का शिलान्यास कर रहा हूं। इस राज्य में अब राजगुरू का स्वतन्त्र पद नहीं होगा। राजा धर्म और राजनीति–दोनों क्षेत्रों का सर्वोच्च्य अधिपति होगा।

राजगुरू : राजन्, आदि पुरुष मनु ने राज्य और धर्म के लिये सनातन प्रबन्ध किया है। आपका आदेश एक पवित्र परम्परा का खंडन है।

बेन : राजगुरू, एक दूसरा आदेश भी है !

(बेन घंटा बजाता है)

प्रतिहारी : जो आज्ञा, देव !

बेन : प्रतिहारी, सेनाध्यक्ष के नाम एक संदेश है। द्वार पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने राज्य की मर्यादा को भगं किया है। उन्हें बंदी बनाया जाय। कल सुबह वधस्थल पर ले जाकर उन्हें प्राणदंड दिया जाय।

प्रतिहारी : जो आज्ञा, राजन् !

बेन : राजगुरू, मुझे दुख है कि मैं आपके आदेशों का सम्मान नहीं कर सका। शासन एक पवित्र दायित्व होता है। मैंने सिर्फ अपने कर्तव्य का पालन किया है।

(अत्रि मुनि का प्रवेश)

अत्रि : राजन, राजसत्ता की भी सीमाएं होती हैं। अगर राजा निरंकुश हो जाय तो वह अपने अधिकारों को खो देता है। उसे पद से हटाना आवश्यक हो जाता है।

बेन : मुनिराज अत्रि, आप हमारे पूर्वज हैं। ऋषियों में अग्रगण्य हैं। पर राजा के अधिकारों के बारे में आपके विचार शास्त्र-सममत नहीं हैं।

अत्रि : राजन्, तुमने अपने असंयत कार्यों से शास्त्र-चर्चा का अधिकार भी खो दिया है। तुमने धर्म, नीति, आचरण के सभी नियमों का खंडन किया है। तुम्हारा राज्य धर्म नहीं, अधर्म का राज्य है।

बेन : मैं एक नयी व्यवस्था का सूत्रपात कर रहा हूँ। यह एक नये युग का शुभारंभ है।

अत्रि : यह व्यवस्था नहीं, अव्यवस्था है। तुम एक नगर को उजाड़ कर जंगल को रोप रहे हो। तुमने अन्याय, अत्याचार एवं अराजकता को ही अपना लक्ष्य मान लिया है।

बेन : पूज्यवर, हरेक नयी व्यवस्था एक अराजक दौर से गुजरती है। वह धीरे-धीरे, आकार ग्रहण करती है। समय से पूर्व समीक्षा गलत निष्कर्ष पर पहुंच सकती है।

अत्रि : सुनो बेन, तुम्हारे शौर्य एवं प्रतिभा से प्रभाविन होकर एक दिन मुनि कुल ने तुम्हें राज्य सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया था। पर तुम्हारी आचरणहीनता एवं अहंकार ने हमें पुनर्विचार के लिये वाध्य कर

दिया है ।

अब मैं तुम्हें ऋषि कुल के निर्णय से सूचित कर रहा हूं !

तुम्हारे कुशासन से क्षुब्ध होकर मुनिकुल ने तुम्हें राज्य-पद से पदच्युत कर दिया है ।

तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम तिथि बदलने से पूर्व राज्यपद ही नहीं, नगर का भी त्याग करो !

और सुनो, यह हमारा अंतिम निर्णय है !

(प्रकाश बुझता है)

दूसरा अंक
पांचवां दृश्य
स्थान–राजगुरू की कुटिया ।
समय–दूसरे दिन सुबह ।

(राजगुरु शिष्यों के बीच प्रवचन कर रहे हैं)

राजगुरु : पुत्रों ईशावास्योपनिषद के पहले मंत्र का अर्थ कर रहा हूं ।
ओमू, वह पूर्ण है और यह भी पूर्ण है क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की उत्पत्ति होती है । पूर्ण का पूर्णत्व लेकर पूर्ण ही बच रहता है ।

(मायावती का प्रवेश)

मायावती : गुरुदेव, आपने जो कुछ कहा है वह मात्र पुस्तकों का सत्य है । जीवन का गणित बिल्कुल भिन्न होता है ।

राजगुरु : आओ देवी माया (शिष्यों से) पुत्रो, तुम लोग अब जा सकते हो !

(शिष्यों का प्रस्थान)

देवी माया, मैं तुम्हारे दुख को समझ सकता हूं । सब कुछ एक दैवी कोप जैसा लगता है । देवी, घटनाओं के क्रम ने मुझे आंतरिक रूप से आहत किया है ।

मायावती : गुरुदेव, एक सुनहला संसार ढह गया है । जिसे लोगों ने इंद्र सा वैभवशाली और विष्णु सा तेजस्वी कहा था आज सार्वजनिक घृणा का पात्र बन गया है ।

गुरुदेव, हमें इस बात का दुख नहीं है कि राजपाट चला गया ! दुख इस बात का है कि हमें पागल कुत्तों की तरह नगर से खदेड़ा जा रहा है ।

राजगुरु : देवी, यह निष्कासन नहीं, बनवास है। भगवान् राम को भी ऐसा ही दुख झेलना पड़ा था ।

मायावती : गुरुदेव, इस दुर्घटना के पीछे कुछ ऐसा रहस्य है जो समझ में नहीं आता। मैं महर्षि अत्रि को दोष नहीं देती। महर्षि हमारे लिये सभी तरह से पूज्य हैं। वे तीनों लोक में समान रूप से सम्मानित हैं।

राजगुरु : देवी, तुम ठीक कहती हो। सारी घटनाएं अत्यंत आश्चर्यजनक रूप से घटित हुई हैं। राजा बेन का आचरण बिलुकल अविश्वसनीय रहा है। मुझे कभी-कभी लगता है कि मैं जिससे बातचीत कर रहा हूं वह राजा बेन नहीं, कोई और है ।

मायावती : गुरुदेव, हाल की घटनाओं ने आर्यपुत्र की पूरी तरह से हत्बुद्ध कर दिया है। वे हरेक प्रश्न का उत्तर एक रहस्यपूर्ण चुप्पी से दे रहे हैं। उनके इस मौन से मैं अत्यन्त आतंकित हूं ।

राजगुरु : देवी, मुझे लगता है कि सारी घटनाओं के पीछे एक छिपा हुआ कोण है। कुछ ऐसा है जो दिखाई नहीं पड़ रहा है। संभव है कि राजा बेन की यंत्रणा के पीछे कोई शाप हो !

मायावती : पूज्यवर, जहां तक मुझे मालूम है आर्यपुत्र का जीवन पूर्णतः निष्कलंक है ।

राजगुरु : कभी-कभी पूर्वजों का पाप परिवार को कई पीढ़ियों तक कष्ट देता है ।

मायावती : गुरुदेव, मैं आपसे मार्गदर्शन के लिये आयी हूं।

राजगुरु : देवी, राजमाता सुनीता परिवार के इतिहास से अधिक परिचित हैं। संभव है कि वे घटना चक्र की कोई व्याख्या दे सकें।

मायावती : ठीक है, गुरुदेव ! मैं मातश्री से परामर्श करूंगी।

(मायावती का प्रस्थान)

(प्रकाश बुझता है)

दूसरा अंक
छठा दृश्य
स्थान—राजमात का गदन
समय—दूसरे दिन सुबह ।

(राजमाता तुलसी की पूजा में संलग्न हैं)

(मायावती का प्रवेश)

मायावती : मातश्री को मायावती का प्रणाम !

सुनीता : आओ पुत्री, किन शब्दों में तुम्हें सांत्वना दूं । लगता है कि एक चमकता हुआ सूर्य अंधेरे की काली झील में गिर गया है । घटनाओं ने हमें बुरी तरह से अपमानित किया है । हमारे वंश का पवित्र इतिहास मलिन हो गया है ।

मायावती : मातश्री, एक भयानक वज्रपात से सब कुछ नष्ट हो गया है । न तो अब सिर पर कोई छाया है और न पैरों के नीचे कोई जमीन ! फिर भी बच गया है एक दंश और कुछ प्रश्न !

सुनीता : पुत्री, तुम किन प्रश्नों की चर्चा कर रही हो !

मायावती : परम पूज्या, गुरुदेव का अनुमान है कि इस घटना क्रम के पीछे कोई शाप है । इस रहस्य को शायद आप जानती हैं ।

सुनीता : राजगुरु ने ऐसा कहा है ! इस अनुमान का क्या आधार है ?

मायावती : इसे मैं नहीं जानती । मातश्री, अनुमान तो अनुमान ही होता है ।

सुनीता : बेटी, इस दुर्घटना के पीछे सचमुच एक लज्जाजनक इतिहास है । इस दुष्चक्र के बीज आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व पड़ गये थे । बेटी, मुझे कहते हुए संकोच होता है कि इस घटना के लिये मैं पूरी तरह से जिम्मेदार हूं ।

मायावती : मातश्री, यह आप क्या कह रही हैं ।

सुनीता : पुत्री, यह एक मूर्ख युवा कन्या सुनीता की कहानी है । मृत्यु के देवता यमराज की इकलौती बेटी, मैं रूप और यौवन के ऊंचे झूले पर झूल रही थी । मेरे अहंकार की कोई सीमा नहीं थी ।

मायावती : मातश्री, सुनकर बहुत आश्चर्य हो रहा है ।

सुनीता : देवराज इंद्र के दरबार की अप्सराएं उर्वशी, मेनका, रंभा–मेरी प्रिय सहेलियां थीं । युवा तपस्वियों से छेड़छाड़ हमारा प्रिय मनोरंजन था । एक दिन मैंने एक युवा गंधर्व को तपस्या करते देखा । यह हमारे लिये नयी चुनौती थी । मैंने उसके साथ छेड़छाड़ शुरू कर दिया ....

(मंच पर अंधकार)

(पर्दे पर छाया-अभिनय)

(वायीं ओर युवा गंधर्व तपस्या में रत है । दायीं ओर युवा सुनीता का नृत्य)

गंधर्व : ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः !

(सुनीता का गायन एवं नृत्य)

(गीत)

फगनुआ आइल सखी,

आज कुमकुम भरल अंगनवां !

गंधर्व : ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः !

सुनीता : चढ़त ही मास फगुनवा सखी हे, हुलसत फिरत अंगनवा !

गंधर्व : ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः !

सुनीता : कथरंग सारी, सबज़ रंग लहंगा,,
कजरा भरल नयनवा
मंगटीका और नक नथबेसर,
अंग-अंग गहनवां !
फगुनवा आइल सखी,
आज कुमकुम भरल अंगनवा !

(सुनीता गंधर्व पर पुष्पवर्षा करती है)

गंधर्व : ओम् शांति ! शांति ! शांति !
देवी, तुम्हारा रूप अद्भुत है। तुम्हारा संगीत अत्यन्त मधुर और आकर्षक है। पर सुन्दरी, मैं इस समय भगवान शंकर की अर्चना कर रहा हूं। देवी, तुम्हारे संगीत एवं नृत्य से मेरी साधना खंडित हो रही है।

सुनीता : गंधर्वराज, प्रेम, वासना, साधना और सन्यास–जीवन के अनिवार्य अंग हैं। प्रकृति ने विभिन्न ऋतुओं की रचना की है। ये ऋतुएं अपने-अपने समय पर ही अवतरित होती हैं। हम चाह कर भी कली को समय से पहले नहीं खिला सकते। हम वसंत को भी समय से पहले नहीं

लौटा सकते ।

प्रियवर, वसंत के फूल, मादक पवन, कोकिला के स्वर-प्रकृति का संदेश निवेदित कर रहे हैं। तुम्हारी असमय साधना एक दुराग्रह है। यह स्पष्टतया प्रकृति का अपमान है।

गंधर्व : देवी, प्रकृति ने ही मुझे साधना के लिये प्रेरित किया है।

सुनीता : नहीं, यह एक झूठा अहंकार है। एक विकृति है। सुनो गंधर्वपुत्र, मैं महाबली, मृत्यु के देवता यमराज की पुत्री सुनीता तुम्हारा वरण करती हूं। सौन्दर्य की यह शिखा, संगीत की दिव्य साधना, नृत्य के मीठे बोल—सब कुछ तुम्हारे चरणों में अर्पित है।

(सुनीता गंधर्व के गले में माला डालती है)

गंधर्व : नहीं देवी, मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। मैंने वर्षों कठिन साधना की है। कृपया मुझे इस तपस्या से विरत न करो।

(सुनीता नृत्य करती है)

(गीत)

पिया मिलना की आई बेरिया,
ठाड़ी रही गोरी दरवजवा !
सावन आवन कह गये,
बीते बारह मास,
बावरी सी डोलत फिरे
बिरहन सारी रात ।
सुबहु पिया वेग करि आवो,
बीत गयी बरसात !

गंधर्व : सुन्दरी, तुम्हारे गीत और नृत्य से मन बहुत चंचल हो गया है। पता नहीं, तुम देवी हो या दानवी। सुन्दरी, मुझे क्षमा करो।

सुनीता : गंधर्व पुत्र, ये प्रश्न अनुचित हैं। मैंने तुम्हारा वरण किया है। मुझे स्वीकार करो।

गंधर्व : लगता है कि तुम्हारा प्रेम प्रदर्शन किसी कुटिल योजना का अंग है। शंकर की तपस्या को भंग करने देवताओं ने कामदेव को भेजा था। इतिहास फिर अपने को दुहरा रहा है।

सुनीता : गंधर्वपुत्र, तुम्हारे शब्द मुझे अपमानित कर रहे हैं। लगता है मैंने ही भूल की है। एक कुपात्र से प्रेम का दान मांगा है।

गंधर्व : नीच नारी, तेरा असली रूप पहचान में आ गया। शंकर ने कामदेव को भस्म कर दिया था। मैं भी अपने तेजोबल से तुझे नष्ट कर दूंगा।

सुनीता : गंधर्व पुत्र, बहुत हो गया। मैंने तुम्हारे गले में फूलों की माला डाली थी। पर तुम उसके योग्य नहीं हो। तुम शंकर की साधना कर रहे हो न। लो मैं तुम्हारे गले में मरे हुए सांप की माला पहना रही हूं।

(सुनीता गंधर्व के गले में सांप लपेटती है)

गंधर्व : नीच, चुड़ैल, तूने मेरी साधना को भंग किया है। तुझे अब अपने कुकर्मों का फल भोगना होगा। मैं चित्रक गंधर्व अपनी तपस्या के तेजोबल से तुझे शाप देता हूं—तू देवी हो या दानवी मानवी हो या किन्नरी—अपने पापों के कारण एक अत्यन्त क्रूर

और अत्याचारी शिशु को जन्म देगी ।
इस शाप का असर तेरे पूरे वंश पर पड़ेगा ।
(छाया अभिनय समाप्त)
(मंच पर पुनः प्रकाश)

मायावती : बहुत दुखद प्रसंग है । कौन जानता था कि एक छोटी सी घटना पूरे वंश को कलंकित करेगी ।

सुनीता : गंधर्व के शाप ने मुझे भयभीत कर दिया । मुझे अपने पिता के पराक्रम पर बहुत भरोसा था । मुझे विश्वास था कि पिता इस समस्या का कोई न कोई समाधान निकाल ही लेंगे ।
पर पिताजी ने जो कुछ कहा वह अत्यन्त निराशाजनक था । पिताजी ने कहा कि उनके पास न कोई स्वतन्त्र शक्ति है न कोई स्वतन्त्र अधिकार । वे तो केवल कर्मफल लागू करते हैं । उन्हें संशोधन करने की कोई छूट नहीं है ।
उन्होंने सुझाव दिया कि मैं पुनः गंधर्व मुनि से मिलूं और क्षमा मांगूं । संभव है कि तपस्वी गंधर्व शाप वापस कर ले । या दंड कम हो जाय ।
मेरे लिये यह विकल्प संभव न था । गंधर्व से क्षमा मांगना मेरे लिये मृत्यु से बढ़कर था ।

मायावती : मातश्री, मैं आपकी मनोदशा को समझ रही हूं ।

सुनीता : मेरी सहेली उर्वशी ने एक अनोखा प्रस्ताव रखा । महर्षि अत्रि का पुत्र अंग युवा और सुन्दर था । उसे विष्णु का वर मिला था । विष्णु ने कहा था–पुत्र, तू जिस बच्चे का पिता होगा वह इंद्र सा वैभवशाली और विष्णु सा तेजस्वी होगा ।

मुझे यह सुझाव पसन्द आया ? अगर मैं अंग का वरण कर लूं तो गंधर्व मुनि का शाप व्यर्थ हो जायेगा।

मैंने अंग का पता लगाया और उसे आकर्षित करने में सफल हो गयी।

मैंने बेन को जन्म दिया। मुझे अब कोई चिन्ता नहीं थी। मुझे विष्णु के वरदान पर पूरा भरोसा था।

लेकिन घटनाओं ने मुझे बिलकुल गलत साबित कर दिया। वसंत की रात को विदूषक के कहने पर पुत्र ने मदिरा पान किया। मदिरा में उन्मत्त होते ही शाप-पुरुष को अवसर मिल गया और वह मेरे पुत्र के शरीर में प्रवेश कर गया।

उसके वाद जो कुछ हुआ वह पुत्र बेन नहीं, शाप-पुरुष की लीला थी।

मायावती : मातश्री, आपने इन घटनाओं की कभी चर्चा नहीं की। आपका मौन आश्चर्यजनक कथा।

सुनीता : मुझे यह सब कहने का साहस नहीं था। फिर मैं प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे भगवान् विष्णु के वरदान पर अनन्त आस्था थी। मैं सोचती थी कि भगवान् की कृपा से सब ठीक हो जायेगा।

मायावती : मातश्री मैं आपसे मार्गदर्शन चाहती हूं। हमें कल सुबह तक नगर-त्याग करना है।

सुनीता : बेटी, वन-दहन और नेमा के अपहरण की बात सुन कर मैं सन्न रह गयी। मैंने विष्णु को न जाने कितनी बार पुकारा। मैंने कितने ही उपवास किये

पर सब कुछ व्यर्थ हो गया ।

मायावती : मातश्री, सब कुछ भाग्य का फेर है । अब दुख करने से क्या लाभ है !

सुनीता : पुत्री, हो सके तो मुझे क्षमा कर देना । एक मूर्ख लड़की ने अहंकार के वश में पूरे परिवार को नरक की आग में झोंक दिया है ।

मायावती : मातश्री, हमें राजपाट का दुख नहीं है । हम मन से वन-गमन के लिये तैयार हो चुके हैं । पर एक प्रश्न हमें भयानक रूप से भयभीत कर रहा है ।

सुनीता : पुत्री, वह कौन सा प्रश्न है ?

मायावती : मातश्री, गंधर्व ने आपको शाप दिया था । पर शाप का परिणाम मेरे पति को भोगना पड़ा । क्या उस शाप की छाया मेरे अजन्मे शिशु पर भी पड़ेगी ?

सुनीता : पुत्री, यह एक अत्यन्त जटिल प्रश्न है । कर्मफल कैसे घटित होता है इसकी व्याख्या बहुत कठिन है । पुत्री, मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हूं ।

मायावती : ठीक है, कोई बात नहीं । अब मुझे विदा दें । मातश्री, हमें आशीर्वाद दें । हम अब वन की ओर प्रस्थान कर रहे हैं ।

सुनीता : ईश्वर तुम्हें सुखी रखे !

(प्रकाश बुझता है)

दूसरा अंक
सातवां दृश्य
स्थान—गंधर्व मुनि की कुटी।
समय—दूसरे दिन सुबह।

(गंधर्व (जोगी) अपनी पत्नी (जोगिन) के साथ खंजड़ी पर गा रहा है)

(गीत)

गोपन धरती, गोपन अंबर,
छोटी है जीवन की चादर,
सबही निरच्छर, पढ़े न आखर।
बोल मोरे सुगना, कवन रंग चादर।

(मायावती और बेन का प्रवेश)

मायावती : गंधर्व मुनि को मायावती का प्रणाम !

गंधर्व : पुत्री, तुम शायद राजा बेन की पत्नी मायावती हो ! और तुम्हारे साथ स्वयं राजा बेन हैं।

मायावती : हाँ गुरुदेव, हमारा यही परिचय है। पर हमारे नाम के साथ अब एक कलंक जुड़ गया है। ऋषि-कुल ने हमें राज्य-पद से पदयुत कर दिया है . इन घटनाओं ने आर्यपुत्र को विक्षिप्त कर दिया है।

गंधर्व : पुत्री, मुझे सब कुछ ज्ञात है। दुख यह है कि इन सभी घटनाओं का सूत्रधार कोई दूसरा नहीं, स्वयं मैं हूं।

मायावती : गुरुदेव, मातश्री ने मुझसे सब कुछ कहा है।

गंधर्व : राजकुमारी सुनीता के उश्रृंखल आचरण से मैं

बहुत क्षुब्ध था। वह मेरी साधना का अंतिम चरण था; हमारे संवाद क्रमशः मर्यादाहीन होते गये। राजकुमारी मेरे अस्वीकार को नहीं झेल सकी। उन्होंने मेरे गले में मरे हुए सांप की माला डाल दी।

मायावती : गुरुदेव, मैंने सब कुछ सुना है।

गंधर्व : उनकी उद्दंडता से मैं भयानक रूप से क्रोध में आ गया। मैंने राजकुमारी को शाप दिया। पुत्री वह शाप अत्यन्त कठोर और क्रूर था।

मायावती : गुरुदेव विधना के विधान को कौन टाल सकता है।

गंधर्व : उस क्रोध की आग में मेरी सारी साधना नष्ट हो गयी। पुत्री, अब मैं एक साधक नहीं, भिक्षु हूं। हम दोनों अब भिक्षा मांगकर अपनी जीविका का निर्वाह करते हैं।

मायावती : गुरुदेव, यह सब समय का चक्र है।

गंधर्व : पुत्री, मुझे इस बात का दुख नहीं है कि साधना के शिखर पर पहुंच कर सब कुछ खो दिया। मुझे अपने असंयत व्यवहार पर घोर पीड़ा है। मुझे एक क्वारी कन्या को इतना क्रूर शाप नहीं देना चाहिये था।

मायावती : गुरुदेव, आपकी बातों को सुनकर बहुत आश्चर्य हो रहा है।

गंधर्व : पुत्री, मैं पश्चाताप की आग में जल रहा हूं। मेरी सबसे बड़ी विवशता यह है कि मैं अब उस शाप को लौटा नहीं सकता।

मायावती : गुरुदेव, बुरा न मानें तो एक बात पूछूं। आर्यपुत्र अपने असंयत आचरण के कारण ऋषि-कुल के द्वारा दंडित हुए हैं। क्या आप भी उन्हें दोषी समझते हैं ?

गंधर्व : नहीं पुत्री, जो कुछ हुआ है उसमें राजा बेन का कोई दोष नहीं था। राजा के आचरण के पीछे शापपुरुष था। पुत्री, तुम्हारे पति का चरित्र निष्कलंक है।

मायावती : ईश्वर को धन्यवाद है। गुरुदेव, आपने मेरे पति को निर्दोष कहकर मेरी हीन भावना को समाप्त कर दिया। अब मुझे किसी बात का दुख नहीं है।

गंधर्व : पुत्री, ईश्वर तुम्हें सुखी रखे।

मायावती : गुरुदेव, मेरे मन में एक फांस है। एक प्रश्न मुझे बहुत आतंकित करता है।

गंधर्व : कहो पुत्री, शायद मैं कोई समाधान निकाल सकूं।

मायावती : गुरुदेव, राजमाता के शाप का प्रभाव मेरे पति पर पड़ा ! क्या उसका असर मेरे अजन्मे शिशु पर भी पड़ेगा ?

गंधर्व : पुत्री, तुमने बहुत कठिन प्रश्न किया है। हमारे कर्मों का फल कब और कैसे घटित होगा, कहना सरल नहीं है। पुत्री, इस प्रश्न का उत्तर देने में मैं असमर्थ हूं।

मायावती : कोई बात नहीं। गुरुदेव हमने वनवास को स्वीकार कर लिया है। लगता है कि कठोर साधना से ही हमारा प्रायश्चित होगा।

(महर्षि अत्रि एवं छह ऋषियों का प्रवेश)

अत्रि : पुत्र बेन ! पुत्री मायावती ! हम तुम्हें आर्शीवाद देते हैं । ऋषि-कुल तुम्हारे लिये शुभकामनाएं लेकर आया है ।

मायावती : पूज्यवर, आप लोगों का स्वागत है। हम आपकी शुभ कामनाओं का सम्मान करते हैं ।

अत्रि : बेटी, हमारा ऋषिकुल तुम्हारे पास एक शुभ संवाद लेकर आया है ।

मायावती : गुरुदेव, अब हमें किसी शुभ संवाद की प्रतीक्षा नहीं है। हमें आदेश दीजिये। क्या कोई नया दंड है ?

अत्रि : पुत्री, तुम्हारा क्रोध स्वाभाविक है । पर आज संदर्भ वदल गया है। ऋषि कुल ने सभी समस्याओं पर विचार कर एक नया निर्णय लिया है ।

मायावती : गुरुदेव, परिस्थितियों ने हमें पूरी तरह से जर्जर कर दिया है । एक शाप ने हमें विनाश के द्वार पर पहुंचा दिया है। बोलिये गुरुदेव, क्या आदेश है ?

आत्रि : पुत्री, हम तुम्हारे लिये नया दंड नहीं सम्मान का प्रस्ताव लेकर आये हैं। अंग रांज्य के सिंहासन पर राजा बेन पुनः आमंत्रित हैं ।

मायावती : नहीं, नहीं, गुरुदेव, यह उचित नहीं होगा। ऋषि कुल ने राजपुत्र पर अनेक अभियोग लगाये थे।

अत्रि : पुत्री, ऋषि-कुल का कहना है कि पुत्र के सत्कर्म उसके दुष्कर्मों की अपेक्षा अधिक प्रबल हैं। उसे एक बार क्षमा पाने का अधिकार है ।

मायावती : क्या इस निर्णय से जनता सहमत है ।

अत्रि : जनता के प्रतिनिधि स्वयं राजा को निमंत्रण देने आये हैं ।

(दो नागरिकों का प्रवेश)

पहला नागरिक : राजन्, इमें क्षमा करें । हम आपके प्रजा-प्रेम एवं न्याय-बुद्धि का स्मरण कर बहुत दुखी हैं । आपसे बिछुड़ कर हम बिलकुल अनाथ हो गये हैं ।

दूसरा नागरिक : राजन्, कुछ असंयत कार्यों ने जनता को क्रोध से विचारहीन बना दिया था । जो कुछ हुआ, उसके लिये हम बहुत दुखी हैं !

मायावती : बन्धुवर, हम आपकी भावनाओं का आदर करते हैं । हम आपके अनुरोध पर गंभीरता से विचार करेंगे ।

अत्रि : पुत्री, राज्य के सभी नागरिक राजा बेन के पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं । तुम्हारी वापसी से उनके हर्ष की कोई सीमा नहीं होगी ।

मायावती : पूज्यवर, हम आपके आदेश को स्वीकार कर सकते हैं । पर एक प्रश्न हमारा पीछा कर रहा है । गंधर्व मुनि ने अनेक वर्ष पूर्व मातश्री को शाप दिया था । उस शाप ने आर्यपुत्र के पूरे भविष्य को नष्ट कर दिया । महामुनि, क्या उस शाप का प्रभाव हमारे अजन्मे शिशु पर भी पड़ेगा ।

अत्रि : पुत्री, यह एक अत्यन्त जटिल प्रश्न है । सुर हों या असुर भाग्य की गति को पहचानने में सभी असमर्थ हैं । बेटी, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर हम लोगों में किसी के पास नहीं है ।

मायावती : पूज्यवर, अगर शाप इतना सशक्त है तो हमारी वापसी का क्या अर्थ होगा ! मुनिवर, हमें राज-पाट, धन या यश का कोई लोभ नहीं है। मैं सिर्फ अपने गर्भशिशु की सुरक्षा चाहती हूँ। मेरे लिये सबसे महत्वपूर्ण है भविष्य ! मेरे पुत्र का भविष्य ! मेरे परिवार का भविष्य ! इससे बड़ा कुछ नहीं है।

अत्रि : पुत्री, हम राजा बेन को अंग देश का सिंहासन दे सकते हैं। पर शाप में किसी तरह का संशोधन हमारी क्षमता के वाहर है।

(कई शंख एक साथ बजते हैं)

गर्भशिशु का स्वर : सुनो मां, सुनो पिता ! सुनें सब लोग !

मायावती : आश्चर्य ! यह तो मेरे गर्भशिशु का स्वर है !

गर्भशिशु : सुनो मां, तुम गंधर्व मुनि के शाप की चिन्ता मत करो। कोई भी शाप मनुष्य के भविष्य को हमेशा के लिये नहीं बांध सकता।

सुनो पिता, कोई भी मेघखंड सूर्य के प्रकाश को हमेशा के लिये नहीं ढक सकता।

सुनो देवताओ, तुम्हारे लिये भी प्रकृति के नियम हैं। तुम्हें भी निरंकुश होने का अधिकार नहीं है। सुनें सभी लोग ! मैं महर्षि अत्रि का प्रपौत्र तपस्वी अंग का पौत्र एवं राजा बेन का अजन्मा पुत्र घोषित करता हूं कि मैं अपने पराक्रम से सभी शापों का खंडन करूंगा। कोई भी शाप मेरे पराक्रम से बड़ा नहीं होगा।

यही आने वाले भविष्य का सच है। यही हमारे भविष्य का जयघोष है।

मायावती : मेरे अजन्मे शिशु, तुम्हारा मंगल हो। तुम्हारे शब्दों में सूर्य सा प्रकाश एवं पवन का विश्वास है। तुमने हमें नया आत्मबल एवं नया आत्मविश्वास दिया है।

बेन : मुनिवर, हमें आपका प्रस्ताव स्वीकार है।

सभी लोग : परम चक्रवर्ती राजा बेन की जय !
परम धार्मिक राजा बेन की जय।

(मुनिगण, नागरिक, राजा बेन और मायावती का प्रस्थान)

गंधर्व मुनि एवं पत्नी–

विधना ने बीनी झीनी चदरिया,
रच-रच कर श्रृंगार गुजरिया
बोल मोरे सुगना, कवन रंग चादर !

(प्रकाश बुझता है)

दृष्टिहीन-दिशाहीन

पात्र

(१) शिवनाथ
(२) नरेन
(३) शंकर
(४) सुरेन्द्र
(५) कलीम
(६) नन्हे मियां
(७) विनोद
(८) कैप्टेन गनेश
(९) लक्ष्मी
(१०) पूनम
(११) शोभा
(१२) एवं चार प्रेत

दृष्टिहीन-दिशाहीन

(१)

मंचीय व्यवस्था–मंच के पृष्ठभाग में गायकों, वादकों एवं कलाकारों की कतार।

(सामूहिक गायन)

सुन्दर सुभूमि भैया, भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया ?

(सूत्रधार और नटी का नृत्य)

एक द्वार घेरे राम, हिम कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्दू घहराये रे बटोहिया !
जाऊं जाऊं भैया रे बटोहिया हिन्द देखि आऊं
जहवां कुहुकि कोइली बोले रे बटोहिया।
अमर प्रदेस देस, सुभग सुघट देस,
मोर हिन्द जग के निचोर रे बटोहिया।

(गायन के बाद तीव्र गति से नृत्य)

मोरे मइया के मूरत सुघर लागे !
माथे पे चानी के चमचम हिमालय,
गरवा में गंगा के माला।
सोने के करधन लहुरा बिन्हाचल
पइयां पे सागर लहर जागे !

(सभी कलाकारों का प्रस्थान)

(अंधे शिवनाथ का प्रवेश)

शिवनाथ : धन्य-धन्य मां धरती तुम्हारी पवित्र भूमि में जन्म पाकर जीवन धन्य हो गया।

(पौत्री लक्ष्मी का प्रवेश)

लक्ष्मी : बाबा ! (निकट आकर) बाबा !

शिवनाथ : क्या है, बेटी ! कुछ काम है ?

लक्ष्मी : बाबा, दिन के बारह बज रहे हैं। तुमने अभी तक कुछ नहीं खाया !

शिवनाथ : खा लूंगा, बेटी ! नरेन का इंतजार कर रहा था।

लक्ष्मी : बाबा, भैया अब नहीं आयेंगे। उनके आने का समय बीत चुका है।

शिवनाथ : वह जरूर आयेगा। आज बेटे गनेश की पुण्यतिथि है। आज ही के दिन गनेश ने कश्मीर के मोर्चे पर अपनी कुर्बानी दी थी।

लक्ष्मी : बाबा, पिता जी को जाना था, चले गये। उनकी याद में हम कब तक आंसू बहायेंगे।

शिवनाथ : बेटी, ये खुशी के आंसू हैं। वह पूरे देश के लिये गौरव का दिन था। पाकिस्तान की सेना ने धोखे से कश्मीर के मोर्चे पर हमला कर दिया था। हमारी टुकड़ी तैयार नहीं थी। उधर पहाड़ पर लगातार बरफ गिर रही थी। पर गनेश ने हार नहीं मानी। उसकी गोलाबारी से पाकिस्तानी सेना में भगदड़ मच गयी।

लक्ष्मी : पर बाबा, पिताजी तो लौट कर नहीं आये। सुनती हूं कि उनकी लाश ही नहीं मिली।

शिवनाथ : बेटी, वह हमारी बदकिस्मती थी। भागती हुई पाकिस्तानी सेना ने आखीरी फायर किया। एक गोला सीधे गनेश को लगा। उसके बाद क्या हुआ, पता नहीं लगा। गनेश का शव भी नहीं मिला।

लक्ष्मी : बाबा, मत कहो यह सब। पता नहीं मन कैसा-कैसा हो जाता है।

शिवनाथ : नहीं बेटी, उस लड़ाई को याद कर छाती गर्व से फूल जाती है ।

लक्ष्मी : बाबा, मैं तुम्हारा दर्द समझती हूं उधर मां दिनोदिन होश खोती जा रही हैं। पर यह सब हमारा प्राइवेट दुख है । देश तो कैप्टेन वर्मा को भूल गया ।

शिवनाथ : बेटी, हिमालय उस घटना का गवाह था । वह आज भी उसे याद करता है। उसकी समाधि पर रोज आसमान से बरफ के फूल झरते हैं ।

(लक्ष्मी की मां, शोभा का प्रवेश)

शोभा : (पागलों की तरह हंसते हुए) मुझे मालूम है...मुझे सब मालूम है ... फौजी ने मुझसे कहा था... कश्मीर की घाटी में लाल फूल खिलते हैं... उसने मुझे फूल भेजा था... सब फूल सूख गये... सब फूल सूख गये... !

लक्ष्मी : मां ! मां ! सुनो मां !

शोभा : फौजी ने कहा था...वह मेरे लिये फूल लायेगा... मैं फूलों को सूखने नहीं दूंगी...मुझे सफेद रंग से बहुत डर लगता है... आदमी का कफन सफेद होता है... आदमी का कफन सफेद होता है...! राम नाम सत्य है ! राम नाम सत्य है !

लक्ष्मी : मां, यह सब क्या कह रही हो !

शोभा : फौजी ने मेरे लिये चिट्ठी भेजा था... पार्सल भेजा था... कहां है मेरी चिट्ठी... कहां है मेरा पार्सल...।

लक्ष्मी : मां, आज छुट्टी का दिन है। आज कोई डाक नहीं आयेगी ।

शोभा : यह सब झूठ है । पापा, मेरा कसूर क्या है ... मुझे क्यों सजा दी जा रही है ।

(शोभा शिवनाथ को पकड़ लेती है)

शिवनाथ : उठो बेटी ! धैर्य रखो ! ईश्वर में विश्वास रखो।

शोभा . ईश्वर ! कहां है, ईश्वर ! कहां है ईश्वर ! मर गया है मेरा ईश्वर ! राम नाम सत्य है ! राम नाम सत्य है ।

('राम नाम सत्य है' कहते शोभा का प्रस्थान)

शिवनाथ : बेटी, बहू कि बीमारी बढ़ती जा रही है ।

लक्ष्मी : मां पापा की मौत को नहीं झेल सकी है । उन्हें समझाना बहुत मुश्किल है ।

शिवनाथ : क्या कहूं, कुछ समझ में नहीं आता ।

लक्ष्मी : बाबा, चलो । पिता जी की बरसी है । मैंने प्रबन्ध कर लिया है ।

शिवनाथ : तुम चलो । मैं जल्दी ही आता हूं ।

(लक्ष्मी का प्रस्थान)

(विनोद का प्रवेश)

विनोद : प्रणाम चाचा, मैं विनोद हूं ।

शिवनाथ : अरे विनोद, कहां से आ रहे हो ?

विनोद : चाचा, शहर गया था । तुरन्त आ रहा हूं । वहां तीन दिन तक ठहरना पड़ा ।

शिवनाथ : शहर में नरेन से मिले थे ?

विनोद : उसके डेरे पर गया था । पर नरेन से भेंट नहीं हुई ।

शिवनाथ : कालेज गया होगा । प्रोफेसर के घर पढ़ने जाता है ।

विनोद : हो सकता है ।

शिवनाथ : सुनो, बिजली आफिस गये थे ।

विनोद : गया था । इंजिनियर साहब दस हजार रुपया मांगते हैं ।

शिवनाथ : दस हजार ! किस बात के रुपये ! ट्रांसफारमर बिजली विभाग का है । उसके जल जाने का हरजाना गांव के लोग क्यों देंगे ।

विनोद : चाचा, यह हरजाना नहीं, दस्तूरी है । इंजीनियर साहब की सलामी है ।

शिवनाथ : अजीब बात है । खेतों में फसल सूख रही है । पर उन्हें मुर्दे का कफन चाहिये । यह बिलकुल गलत है ।

विनोद : चाचा, यह बात किससे कही जा सकती है ! कौन कह सकता है !

शिवनाथ : मैं कहूंगा । ये लोग देश को बरबाद कर रहे हैं । इस बात को खुलकर कहना होगा ।

विनोद : कोई फायदा नहीं है । इससे कुछ होने वाला नहीं है ।

शिवनाथ : मैं देश की आजादी के लिये लड़ा । लाठियों की मार से मेरी आंखें चली गयीं । पर आज गलत लोग देश को लूट रहे हैं । क्या हमें बोलने का भी हक नहीं है ।

विनोद : चाचा, देश की बात पीछे सोचना । पहले अपने घर की बात पर गौर करो ।

शिवनाथ : क्या मतलब ?

विनोद : चाचा, नरेन को शहर की हवा लग गयी है । वह बुरी संगत में पड़ गया है ।

शिवनाथ : नरेन बहुत अच्छा लड़का है । ऐसा नहीं हो सकता ।

विनोद : चाचा, यही हो रहा है । लौज के लड़के कह रहे थे कि नरेन ने कालेज छोड़ दिया है । वह डेरे पर से भी गायब रहता है ।

शिवनाथ : लगता है कि नरेन अपने बाबा के ही कदमों पर चल रहा है। आजादी की लड़ाई में मैंने भी कालेज छोड़ दिया था।

विनोद : नहीं चाचा, यह बात नहीं है। नरेन को खतरनाक नशे की लत लग गयी है।

शिवनाथ : यह क्या कह रहे हो। ऐसा कभी नहीं हो सकता।

विनोद : चाचा, नशा उसे मौत के मुंह में ले जा रहा है। उसे बचाना होगा।

शिवनाथ : विनोद, नरेन के बाबा आजादी की लड़ाई में लड़े। उसके पिता ने मुल्क के लिये कुरबानी दी। नरेन गलत रास्ते पर नहीं जा सकता।

विनोद : चाचा, इस बात को भूल जाओ। बनने में बहुत दिन लगते हैं। बिगड़ने में देर नहीं लगती।

शिवनाथ : नरेन मेरी बहुत इज्जत करता है। मैं उसे समझा दूंगा।

विनोद : बात बहुत आसान नहीं है। नरेन को शहर से घर ले आओ।

शिवनाथ : हां, यही ठीक है। मैं आज ही जाता हूं।

विनोद : अब चलता हूं, चाचा। मेरी बातों का बुरा न मानना।

(विनोद का प्रस्थान)

(शिवनाथ उठकर टहलता है)

(लक्ष्मी का प्रवेश)

लक्ष्मी : बाबा।

शिवनाथ : क्या है, बेटी।

लक्ष्मी : बाबा, तुमने बड़े बक्से से रुपये निकाले हैं ?

शिवनाथ : बेटी, मैं पेंशन के पूरे रुपये तुम्हें दे देता हूं। बक्से से रुपये तुम्हीं निकालती हो।

लक्ष्मी : धोबी पैसे मांग रहा है। मैंने बड़े बक्से को खोला। वहां एक भी पैसा नहीं है।

शिवनाथ : तुमने कहीं और तो नहीं रख दिया ?

लक्ष्मी : नहीं, ऐसा क्यों करूंगी। तुमने किसी को चाभी तो नहीं दी।

शिवनाथ : नरेन को दी थी। वह महीने का खर्च मांग रहा था।

लक्ष्मी : पर भैया को मैंने महीने का खर्च दे दिया था।

शिवनाथ : हो सकता है कि किसी और ने बक्सा खोला हो !

लक्ष्मी : रुपये के बगल में मां के जेवर थे। बाहर का चोर जेवर क्यों छोड़ देता !

शिवनाथ : तुम कहना क्या चाहती हो ?

लक्ष्मी : भइया से पूछो कि रुपये क्या हुए ! यह सब ठीक नहीं है !

शिवनाथ : हे राम, यह दिन भी देखना था !

लक्ष्मी : भइया को बुलाना होगा। उनसे पूछना होगा।

शिवनाथ : चलो, आज ही शहर चलते हैं। तुम ठहरो, मैं तैयार होकर आता हूं।

(शिवनाथ का प्रस्थान)

(शोभा का प्रवेश)

शोभा : फौजी की फोटो..फूल... माला ! तुम सब फौजी को मार रहे हो ! तुम सब फौजी को मार रहे हो !

लक्ष्मी : मां, पिता जी को मरे दो साल हो गये।

शोभा : नहीं, यह झूठ है ! बहुत झूठ है। यह नहीं हो सकता !

लक्ष्मी : मां, पिता जी की मृत्यु एक सच है। यह इस परिवार का सबसे बड़ा दुख है।

शोभा : सुनो, तुम एक झूठ को बार-बार दुहरा रही हो। मैंने तुमसे कहा न कि फौजी नहीं मर सकता।

लक्ष्मी : मां, सुनो मां !

शोभा : फौजी मुझसे कहता था। कश्मीर के लोग जन्तर-मंतर जानते हैं। एक खतरनाक रूह उसका पीछा कर रही है। पर मैं भी मंत्र जानती हूं। मैं मंत्र से उसे भस्म कर दूंगी....।

लक्ष्मी : मां !

शोभा : रिंग-क्लिंग, रिंग-क्लिग रिंग-क्लिंग स्वाहा !

लक्ष्मी : मां, जो होना था हो गया ! पिता जी चले गये। कोई भी मंत्र उन्हें वापस नहीं ला सकता।

शोभा : कौन कहता है कि फौजी चला गया ! मेरे रहते फौजी को कुछ नहीं होगा ! कुछ नहीं होगा !

(रोती है)

(शिवानाथ का प्रवेश)

लक्ष्मी : मां, तुम रो रही हो ! मां, अगर तुम ही रोओगी तो हमारा क्या होगा !

शोभा : नहीं-नहीं, मैं नहीं रोउंगी। कभी नहीं रोउंगी ! फौजी के रहते मैं कैसे रो सकती हूँ !

(शोभा का राते हुए प्रस्थान)

शिवनाथ : बहू का पागलपन बढ़ता जा रहा है।

लक्ष्मी : चलो बाबा, मां के दुख का कोई इलाज नहीं है। नरेन भइया को संभालना ज्यादा जरूरी है।

(प्रकाश बुझता है)

स्थान—शहर के बाहर एक बगीचा। पृष्ठभूमि में गांधी चबूतरा। गांधी जी की एक छोटी सी मूर्ति।

समय—दूसरे दिन सुबह।

(नरेन, शंकर और सुरेन्द्र मोढ़ों पर बैठे हुए हैं। सभी के हाथों में गिलास है। सामने शराब की खाली बोतल है)

सुरेन्द्र : शंकर दादा, नशा उखड़ रहा है।

शंकर : कलीम गया है। लेकर आता होगा।

सुरेन्द्र : दादा, हम पहले एक ही बोतल में निपट जाते थे। अब एक-एक बोतल भी पूरी नहीं पड़ती।

नरेन : साला पानी मिला देता है।

शंकर : नहीं-नहीं। नन्हें मियां पानी नहीं मिलाता। खाटी माल देता है।

नरेन : पर नशा बहुत जल्दी टूट जाता है। दादा, तुमने हमारे पाउडर के लिये कह दिया है न ?

शंकर : नन्हें मियां ब्राउन सुगर नहीं रखता।

नरेन : रखता है। साला मांगने पर देता है।

शंकर : नरेन, ब्राउन सुगर बहुत खराब चीज़ है। वह आदमी को बिलकुल बरबाद कर देती है।

नरेन : दादा, हरेक अच्छी चीज़ बरबाद कर देती है। जीने के लिये दो दिन काफी है। सौ साल कौन साला जीना चाहता है।

शंकर : सुनता हूं कि तुम्हारे दादा को खबर लग गयी है। वह यहां आ गये तो क्या होगा !

नरेन : उससे कोई फरक नहीं पड़ता। दादा का जमाना खतम हो गया। (कलीम और नन्हें मियां का प्रवेश) (गमछे में चार बोतल और कुछ खाने का सामान है)

सुरेन्द्र : अरे नन्हें मियां, ये पकौड़ियां क्यों लाये ! हमें जरूरत नहीं है ।

नन्हें : बाबू, ई पियाज की पकौड़ी है, कुछ खाये-बिना पियोगे तो दारु जिगर चाट जायेगी ।

सुरेन्द्र : हमें कुछ नहीं होगा। हम तो जहर पीकर भी हजम कर सकते हैं ।

नरेन : नन्हें मियां, हमारी खुराक नहीं लाये ।

नन्हें : नहीं बाबू, अब हम उसका धंधा नहीं करते ।

नरेन : नन्हें मियां, हमीं को चरका देते हो ।

नन्हें : नहीं सरकार, उसमें बहुत लफड़ा है । पुलिस कपार पर चढ़ी रहती है। मुनाफा कम, फजीहत ज्यादा है ।

(नन्हें का प्रस्थान)

शंकर : लो यारो, उठाओ जाम !

सुरेन्द्र : आज का जाम, नरेन भैया के नाम ! उन्हीं के पैसे से हम जश्न मना रहे हैं ।

कलीम : हां-हां, थ्री चियर्स फॉर नरेन भइया ।

(सब गिलास से गिलास टकराते हैं)

नरेन : यारो, तुम लोग पियो मेरी खुराक नहीं आयी । उसे लाना होगा ।

शंकर : यह जाम तुम्हारे नाम है। कम से कम साथ तो दो ।

नरेन : नहीं दादा, इससे मुझे कुछ नहीं होगा । मुझे चाहिये थोड़ा सा जहर-ब्राऊन सुगर !

शंकर : नरेन, तुम बहुत दूर जा रहे हो ।

नरेन : दादा, डोंट टेल मी व्हाट इज़ गुड ऐंड व्हाट इज़ बैड। इन बातों के लिये बहुत देर हो चुकी हैं।

शंकर : ओ.के. ब्वय, गो टू हेल ।

(नरेन का प्रस्थान)

कलीम : (पीते हुए) दादा, नरेन ठीक कहता है। अच्छा वही है जो अच्छा लगे। बुरा वहीं है जो बुरा लगे।

सुरेन्द्र : दादा, जब हाथ में जाम हो तो लेक्चर का क्या काम है।

कलीम : यारो, जीने के लिये पीना जरूरी है। क्या कहा है, शायर ने –

हम तेरी चाह में, ऐ यार वहां तक पहुंचे,
होश ये भी न है, कि कहां तक पहुंचे।

(सब वाह-वाह कहते हैं)

शंकर : यारो, हम पीते हैं जीने के लिये। लेकिन हम जीते क्यों हैं ?

सुरेन्द्र : हां-हां, यही तो सवाल है। हम जीते क्यों हैं !

कलीम : इसमें क्या मुश्किल है। हम पीते हैं जीने के लिये ! और हम जीते हैं पीनै के लिये !

(सब वाह-वाह करते हैं)

कलीम : यारो, शायर ने खूब कहा है।

सदियों, सदियों न वहां पहुंचेगी दुनिया;
एक ही घूंट में मस्ताने वहा तक पहुंचे।

(वाह-वाह की आवाज)

सुरेन्द्र : जियो-जियो मेरे यारो ! एक कवि ने कहा है –

शंकर : क्या कहा है।

सुरेन्द्र : कवि कहा है कि नायिका की आांखों में शराब का नशा है।

अमिय हलाहल मद भरे
खेत श्याम रतनार;
जियत-मरत झुक-झुक परत,

जेहि चितवत इक वार !

(सब वाह-वाह करते हैं)

शंकर : लगता है कि हम बहुत हगामा कर रहे हैं ।

कलीम : हंगामा ! हंगामा कौन करता है । क्या कहा है, गालिब मियां ने-

हंगामा क्यों है बरपा,
थोड़ी सी जो पी है,
डाका तो नहीं डाला है,
चोरी तो नहीं की है ।

(वाह-वाह की आवाज)

शंकर : यारो, बगल में कब्रगाह है । हमारे शोर से कहीं मुर्दे जाग गये तो क्या होगा ।

सुरेन्द्र : हां, अगर मुर्दे जाग गये तो क्या होगा । जागकर अगर वे पीने के लिये आ गये तो क्या होगा ।

कलीम : इसमें क्या मुश्किल है । वे यहां जाम पियेंगे । हम उनकी कब्र में आराम करेंगे ।

सुरेन्द्र : ओह नो-नो, कब्र में जाय मरे दुश्मन ! आज तो बस मस्ती का आलम है । क्या कहा है रसूलन बाई ने –

शंकर : एही ठइयां मोतिया हेरानी हो रामा !

कहवां मैं ढूंढू ।
कोठरी में ढूंढलूं,
अटरिया पे ढूंढलूं,
ढूंढत-ढूंढत बौरा गयी रामा
कहवां मैं ढूंढू ।

(सब उठकर नाचने लगते हैं)

(दूर से आवाज) नरेन ! नरेन ! तुम कहां हो नरेन !

सुरेन्द्र : दादा, यह किसकी आवाज है ? (नेपथ्य सै) नरेन ! नरेन ! कहां हो नरेन !

शंकर : अरे, ये तो नरेन के बाबा की आवाज है ।

कलीम : दादा, ये बोतल-बोतल हटा दूं ?

सुरेन्द्र : अरे दादा जी को दिखाई थोड़े ही पड़ना है ।

शंकर : जिन्हें दिखाई नहीं पड़ता वे अधिक सुनते हैं । पर हम कोई चोरी थोड़े ही कर रहे हैं ।

(शिवनाथ और लक्ष्मी का प्रवेश)

शिवनाथ : नरेन ! नरेन ! तुम कहां हो ?

लक्ष्मी : भइया, तुम लोगें ने हमारे नरेन भइया को देखा है ?

सुरेन्द्र : हां, हम, तुम्हारे नरेन भइया को जानते हैं ।

लक्ष्मी : कहां है, नरेन भइया ?

सुरेन्द्र : यह हम नहीं जानते ! किसी पेड़ के नीचे पड़ा होगा ।

शिवनाथ : नरेन मेरा पोता है । वह भटक गया है । उसे इस नरक में तुम लोग लाये हो ।

शंकर : कोई किसी को बांधकर नहीं लता । आपकी पीढ़ी धरती पर स्वर्ग लाने की बात करती थी । आज हम अपना-अपना नरक खोज रहे हैं ।

शिवनाथ : तुम्हारी उम्र में मैं आज़ादी की लड़ाई लड़ रह था । मेरे साथी कवि कैलाश को घोड़े के पैर से बांधकर घसीटा गया था । वह अंतिम सांस तक 'वंदे मातरम्' का नारा देता रहा ।

सुरेन्द्र : आप ठीक कहते हैं । आपकी पीढ़ी आज़ादी के लिये लड़ी । हमारे पास गर्व करने लायक कोई चीज नहीं है ।

शंकर : लेकिन बाबा, वह किसकी आजादी थी । कैसी

आजादी थी । आप रात भर अंधेरे के खिलाफ लड़ते रहे । पर सुबह कहां है ? सूरज कहां है ? सूरज की सारी किरणों को किसने चुरा लिया ?

सुरेन्द्र : बाबा, हमारी पीढ़ी के सामने कोई मॉडल नहीं है। हमने गांधी को नहीं देखा ! तिलक को नहीं देखा ! सुभाष को नहीं देखा । हमने सरकारी दफ्तरों में सिर्फ बूढ़ों की तस्वीरें देखी हैं । उन पर अब ढेरों धूल जम गयी है ।

शिवनाथ : हरेक पीढ़ी को अपना मॉडल खुद बनाना पड़ता है । मैं और मेरा बेटा अलग-अलग तरह से देश के लिये लड़े । मैंने आज़ादी की लड़ाई में अपनी आंखें खो दीं । बेटे ने वतन के लिये अपनी जान कुरबान कर दी ।

शंकर : बाबा, गनेश वर्मा ने देश के लिये प्राण दिये । हमें उनपर गर्व है । पर क्या आप भूल गये कि सरकार ने परम वीर चक्र शहीद गनेश वर्मा को नहीं कर्नल वोहरा को दिया ।

सुरेन्द्र : बाबा, क्या आप यह भी भूल गये कि जिस समय गनेश वर्मा कश्मीर के मोर्चे पर लड़ रहे थे उसी समय ब्रिगेडियर शर्मा और उनकी पूरी यूनिट कश्मीर के दूसरे मोर्चे पर स्मगलिंग कर रही थी । मैं पूछना चाहता हूं कि ब्रिगेडियर शर्मा को क्या सजा मिली ?

शिवनाथ : मैंने ऐसे सवाल कभी नहीं पूछे । इन सवालों से गनेश की आत्मा को चोट पहुंचेगी ।

लक्ष्मी : बाबा, मौलिक सवालों पर चुप रहने से भी काम नहीं चलेगा । बुद्धिजीवियों की उदासीनता, पलायन का दूसरा नाम है ।

शंकर : बाबा, पुरानी पीढ़ी ने हमें देश के नाम पर एक भयानक नरक दिया है ।

शिवनाथ : पता नहीं, नयी पीढ़ी समस्याओं को समग्र रूप से क्यों नहीं देखती । हम सब देश की संतान हैं । देश का स्वार्थ हमारे स्वार्थों से बड़ा है ।

शंकर : हां बाबा, गांधी ने ऐसा ही कुछ कहा था । पिछले चालीस साल से सब यही दुहरा रहे हैं । पर हम कब तक इंतजार कर सकते हैं ।

सुरेन्द्र : बाबा, हम किसी विशेष सुविधा की मांग नहीं कर रहे हैं । हजारों साल पहले आदमी के सामने सबसे अहम् सवाल था कि वह कैसे जिये । हम आज भी उसी सवाल से जूझ रहे हैं ।

शिवनाथ : बेटे, मैं तुम्हारे दुःख को समझ रहा हूं ।

शंकर : बाबा, एक लड़के की कहानी सुनो ! मां-बाप का इकलौता बेटा । लाड़-प्यार में पला । पढ़ने में अव्वल निकला-नर्सरी से एम० ए० तक । वह दस साल से एक कालेज में खट रहा है । उसे बेतन के नाम पर एक पैसा भी नहीं मिलता ।

सुरेन्द्र : बाबा, उस लड़के का नाम शंकर है ।

शंकर : बाबा, उस लडके को अपनी नियुक्ति के लिये पच्चीस हजार रुपये देना पड़ा था । । बाप ने अपनी पेंशन बेचकर यह पैसा दिया था । दो साल हुआ पिता इंतजार करते-करते चले गये । बोलो बाबा, उस लड़के के लिये तुम्हारे पास क्या संदेश है !

शिवनाथ : सब कुछ सुनकर बहुत दुख हो रहा है ।

शंकर : बाबा, पहले हम भविष्य की चर्चा करते थे । अब नहीं करते । इन दस वर्षों ने हमसे हमारा भविष्य

छीन लिया है ।

सुरेन्द्र : दूसरी तरफ इन वर्षों में सचिव महोदय की कई कोठियां खड़ी हो गयी हैं ।

शिवनाथ : बहुत बुरा समय आ गया है ।

कलीम : बाबा, मेरी भी एक कहानी है। मेरे वालिद हाथी-दांत के कारीगर थे । पर सरकार ने हाथी दांत पर पाबंदी लगा दी । हमारा पूरा परिवार भूखो मर रहा है

सुरेन्द्र : बाबा, मेरी तीन बहनें विवाह-योग्य हैं । उनमें कोई कमी नहीं है । सारी कमी हम लोगों में है। मेरे पिता बूढ़े हैं । और मैं बेकार हूं ।

शिवनाथ : क्या कहूं, कुछ समझ में नहीं आता ।

सुरेन्द्र : पिता जी की सलाह है कि हम अपना मौरूसी मकान बेच दें । पर इससे तो सिर्फ पहली बहन पूनम का दहेज दिया जा सकता है ।

(सुरेन्द्र की बहन पूनम का प्रवेश)

पूनम : भइया ।

सुरेन्द्र : अरे पूनम, यहां क्यों आ गयी !

पूनम : चलो भइया घर चलो !

सुरेन्द्र : क्यों, क्या बात है ?

पूनम : क्या बात नहीं है ! घर में घनघोर महाभारत छिड़ गया है ।

सुरेन्द्र : कोई बाहर से आया है ?

पूनम : बक्सर से वकील साहब आये है । बाबू ने दो लाख में मेरी शादी का सौदा कर दिया है ।

सुरेन्द्र : और कोई आया है ?

पूनम : सेठ छग्गनमल आये थे । बाबू ने दो लाख रुपये में मकान का सट्टा कर दिया है ।

सुरेन्द्र : तुम चलो, मैं आता हूं।

पूनम : जल्दी आना। नहीं तो सब कुछ खत्म हो जायगा।

(पूनम का प्रस्थान)

शिवनाथ : बेटे, तुमको साथ जाना चाहिये था।

सुरेन्द्र : कोई फायदा नहीं है। पूनम बहुत भावुक लड़की है। मकान की बिक्री की बात पर रोने लगती है। पर हमारे पास दूसरे विकल्प ही नहीं हैं।

शिवनाथ : क्या दहेज की रकम नहीं कम हो सकती ?

सुरेन्द्र : शायद नहीं बहुत मोलभाव करने से बातचीत टूट जायेगी।

शिवनाथ : बुत दुःख की वात है। इस देश में लोगों के पास कैरेक्टर की कमी है।

सुरेन्द्र : बाबा, कैरेक्टर की कमी नीचे नहीं, ऊपर है। इस पीढ़ी को एक अत्यन्त क्रूर और अमानवीय व्यवस्था मिली है।

लक्ष्मी : अगर यह सच है तो तुम विरोध क्यों नहीं करते ?

सुरेन्द्र : कोई फायदा नहीं है। गुजरात के नवजवानों ने आंदोलन किया। विहार में भी वही हुआ। बिनोवा भावे पूरे देश में झोली लेकर घूमते रहे। पर किसको कितना फायदा हुआ ?

शिवनाथ : बेटे, तुम शायद ठीक कहते हो। पर ड्रग्स् किसी समस्या का समाधान नहीं है। यह उजाले के खिलाफ अंधेरे की आवाज है।

सुरेन्द्र : वावा, सच कहो तो हमें अब पता ही नहीं है कि अंथेरे और उजाले में क्या फरक है। सच कहें तो हमने सोचना ही छोड़ दिया है।

लक्ष्मी : लगता है कि हम सभी ने लड़ने के पहले हथियार डाल दिया है।

शिवनाथ : नहीं, मैं यह नहीं कहूंगा। पर बेटो, मुझे मेरा नरेन लौटा दो। उसके बिना मैं नहीं जी सकूंगा।

कलीम : नरेन भइया बहुत दूर जा चुके हैं। उनका लौटना बहुत मुश्किल है।

शिवनाथ : नहीं-नहीं ऐसा मत कहो।

लक्ष्मी : जाओ भइया, नरेन भइया को लोटा कर आओ। कहना कि एक बीमार मां अपने बेटे का इंतजार कर रही है।

शंकर : ठीक है, हम कोशिश करते हैं। सुरेन्द्र और कलीम जाओ। देखो नरेन कहां है।

(सुरेन्द्र और कलीम का प्रस्थान)

शिवनाथ : बेटे, मैं तुमको नसीहत नहीं दे रहा हूं। दे भी नहीं सकता। पर तुम्हारे लिये अच्छा क्या है, बुरा क्या है -तुमको सोचना चाहिये।

शंकर : बाबा, सिर्फ सोचने से क्या होगा। गांधी ने सोचा। नेहरू ने सोचा। विवेकानन्द ने बहुत सोचा पर यह देश जहन्नुम में जा रहा है इसके लिये सिर्फ हम जिम्मेवाार हैं ?

शिवनाथ : नहीं, देश की सभी समस्याओं के लिये जिम्मेवार नहीं हो। पर तुम जहर पी रहे हो। मुझे तो मौत की दस्तक सुनाई पड़ रही है।

(प्रेतों की एक पांत 'हू-हा' करती हुई मंच से गुजर जाती है)

शंकर : बाबा, समस्याओं का अजगर हमारी पीढ़ी को डंसता जा रहा है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है।

(एक खाट पर मूर्छित नरेन को लेकर नन्हें मियां, कलीम और सुरेन्द्र का प्रवेश)

कलीम : दादा, नरेन भइया मिल गये।

लक्ष्मी : अरे, नरेन भइया तो बेहोश हैं ।

शंकर : घबराने की कोई बात नहीं है । ब्राउन सुगर का नशा है । जाओ पानी लेकर आओ ।

(कलीम और सुरेन्द्र का प्रस्थान)

(शंकर नन्हें मियां को पीटता है)

शंकर : सब इस साले की करतूत है ।

नन्हें मियां : भइयां, हम तो रोजी कमाते हैं । पर जो करोड़ों रुपये का सौदा करते हैं, उनसे कोई नहीं पूछता ।

शंकर : भाग जाओ यहां से । नहीं तो जान ले लूंगा ।

(नन्हें मियां का प्रस्थान)

(कलीम और सुरेन्द्र पानी लाते हैं)

(नरेन पर छिड़कते हैं)

नरेन : (होश में आते हुए) आसमान से बूंदें गिर रही हैं । दादा, मैं भीग रहा हूं ।

शिवनाथ : नरेन ! नरेन ! मैं हूं तुम्हारा बाबा ।

लक्ष्मी : नरेन भइया, मैं लक्ष्मी हूं ।

नरेन : बाबा ! लक्ष्मी ! तुम लोग क्यों आये हो ?

शिवनाथ : बेटे, हम तुमको लेने आये हैं । तुम्हारी मां तुम्हारे लिये बहुत बेचैन है ।

नरेन : मां, तुम्हारा नरेन बहुत दूर जा चुका है ।अब वह लौट नहीं सकता ।

लक्ष्मी : भइया ! उठो भइया ।

नरेन : मुझे ब्राउन सुगर चाहिये । मुझे ब्राउन सुगर चाहिये । उसके बिना मैं नहीं जी सकता ।

लक्ष्मी : भइया, आंखें खोलो । मां की हालत ठीक नहीं है ।

नरेन : सुनो, तुम्हारे पास ब्राउन सुगर है ?

लक्ष्मी : हां मेरे पास पूरा पैकेट है ।

नरेन : (आंख खोलते हुए) सुबह से चैला था । रात हो गयी ।

पर इतना अंधेरा क्यों है।

लक्ष्मी : कहां अंधेरा है। अभी तो शाम है।

नरेन : अगर यह शाम है तो सूरज क्यों नहीं है ?

लक्ष्मी : सूरज की किरणें तुम्हारे चेहरे पर पड़ रही हैं। देखो भैया।

नरेन : कहां है सूरज ! मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है। बाबा, मुझे क्या हो गया है।

शिवनाथ : बेटे, मुझे देखो ! मैं तुम्हारे पास खड़ा हूं।

नरेन : नहीं-नहीं, मैं तुम्हें नहीं देख रहा हूं। बाबा, मैंने अपनी आंखें खो दी हैं।

शंकर : बहुत दुःख की बात है। नरेन पहले भी आंख में तकलीफ की शिकायत करता था। लगता है कि ब्राउन सुगर उसकी आंख ले गया।

लक्ष्मी : नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

शंकर : मैंने नरेन को बहुत मना किया। पर उसके ऊपर जैसे भूत सवार था।

नरेन : बाबा, मैं किसी का दोष नहीं देता। सब मेरी किस्मत का दोष है।

शिवनाथ : बेटे, मैने तो अपनी आंखे देश के लिये दी थी। पर तुम्हें अपनी आंखें खोकर क्या मिला।

लक्ष्मी : बाबा, भइया ने लगातार विष पिया है। यह शुद्ध आत्महत्या है।

(मंच पर चार प्रेत हूं-हा करते हुए गुजर जाते हैं)

शिवनाथ : बेटी, मैंने जीवन में कुछ सपने देखे थे। मैंने उनकी कीमत भी दी। पर मेरे सारे सपने चूर-चूर हो गये।

लक्ष्मी : बाबा, तुम किन सपनों की बात कर रहे हो ?

शिवनाथ : बेटी, मेरी पीढ़ी का सबसे बड़ा सपना था--आजादी। उसके लिये हजारों-लाखों लोगों ने कुरबानी दी। पर हमें सिर्फ नाम की आजादी – एक धुंध ही मिला।

लक्ष्मी : बाबा, यह क्या कह रहे हो ।

शिवनाथ : हमारा दूसरा सपना था, देश की हिफाजत । मेरे बेटे ने देश की रक्षा के लिये प्राण दे दिया । पर नेताओं ने देश को बांट दिया । देश को फिर बांटने की साजिश हो रही है ।

लक्ष्मी : नहीं बाबा, ऐसा नहीं होगा ।

शिवनाथ : हमने तीसरी पीढ़ी के बारे में भी एक सपना देखा था । पर यह पीढ़ी कोई लड़ाई नहीं लड़ना चाहती । लाखों नवजवान नशा खाकर अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हैं । यह कैसी पीढ़ी है जिसके पास न दिशा है, न दृष्टि ! (प्रेतों की एक कतार' हा-हू' करती हुई गुज़र जाती है)

सुरेन्द्र : बाबा, हमारे पास आशा का कोई चिराग नहीं है । नशा और निराशा एक ही चीज़ के दो नाम हैं ।

लक्ष्मी : बाबा, एक और सपना देखो । सच तो यह है कि नयी पीढ़ी के सामने कोई सपना ही नहीं है ।

शंकर : हां बाबा, हमें फिर एक सपना दो ! बाबा, इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा जो अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिये देश का सौदा कर रहे हैं ।

सुरेन्द्र : इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा जिन्होंने अपनी कुर्सी के लिये देश को गृह युद्ध की आग में झोंक दिया है ।

लक्ष्मी : बाबा, हम फिर उन लोगों को खोजें जो अब भी सच्चाई की कद्र करते हैं । जो अब भी ईमानदारी की कद्र करते हैं ।

शंकर : हो सकता है कि इस तलाश में हमें फिर से एक गांधी मिल जाय ।

पूनम : बाबा, गांधी सिर्फ एक सपने का नाम नहीं है । गांधी ने देश को कर्म का दर्शन दिया था ।

सुरेन्द्र : अरे पूनम, घर पर क्या हुआ ?

पूनम : जो होना चाहिये था, वही हुआ। मैंने सेठ जी को कह दिया कि मकान नहीं बिकेगा। मैंने वकील साहब को भी कह दिया कि पूनम को दहेज की तराजू पर नहीं तौला जा सकता।

सुरेन्द्र : लेकिन, पूनम।

पूनम : अब लेकिन-वेकिन से क्या होगा ! तुम निर्णय नहीं ले सके। मैंने निर्णय लिया। और सुनो, पूनम के दहेज के लिये पूरे परिवार को मौत की सज़ा नहीं दी जा सकती।

शंकर : पर पूनम बहन क्या सिर्फ कोरे सिद्धान्तों को लेकर जिया जा सकता है ?

पूनम : शंकर भइया, बुराइयों से सुलह करके भी नहीं चला जा सकता। तय कर लो कि इस महाभारत में तुम किधर हो। और सुनो, शराव या ब्राउन सुगर लेकर शहीद बनने का नाटक भी बहुत देर तक नहीं चल सकता।

(बैसाखी लेकर कैप्टेन गनेश का प्रवेश। पीछे शोभा भी है)

लक्ष्मी : अरे, ये तो पापा हैं ! पापा ... पापा... तो तुम जिन्दा हो ?

गनेश : बेटी, मैं सचमुच जिन्दा हूं। बाबू, ईश्वर ने मुझे बचा लिया है। सीधे मौत के मुंह से आ रहा हूं।

(शिवनाथ का पैर छूता है)

शिवनाथ : बेटा गनेश, क्या यह सच है ! आर्मी ने तुम्हारी मृत्यु की सूचना दी थी।

गनेश : बाबू, पाकिस्तान की सेना ने धुएं का बम फेंक कर मेरा अपहरण किया था। उन्होंने मुझे हर तरह से टार्चर किया पर किसी तरह का सीक्रेट नहीं पा सके। दो साल के बाद कैदियों की अदला-बदली में मैं छूट गया।

लक्ष्मी : ईश्वर की महान कृपा है।

शिवनाथ : बेटे, तुम्हें पाकर मैं अपने को संभाल नहीं पा रहा हूं।

सुनो भगवान् । मैंने तुमसे कभी कुछ नहीं मांगा । मेरे बेटे को लौटा कर तुमने मुझे सब कुछ दे दिया है ।

लक्ष्मी : बाबा, अंत में सत्य की विजय होती है ।

गनेश : लक्ष्मी, सत्य की जीत अपने आप नहीं होती । उसके लिये संघर्ष करना पड़ता है ।

नरेन : पापा, मुझे माफ करना । मैंने ब्राउन सुगर खाकर सब कुछ खो दिया है ।

गनेश : बेटे, हमने सब कुछ सुन लिया है । हमारे चारों ओर समस्याएं हैं, दुख है, पीड़ा है । पर उससे लड़कर ही समाधान खोजा जा सकता है ।

पूनम : चाचा, मैं हूं पूनम ! सुरेन्द्र की बहन ! हम सब तुम्हारा स्वागत करते हैं ।

शिवनाथ : बेटे गनेश, यह तुम्हारी ही नहीं, हम सब की नयी जिन्दगी है ।

गनेश : बाबू, हमें सचमुच नयी जिन्दगी शुरू करनी है । आपने मुझे देश की हिफाजत के लिये भेजा था । पर बाबू देश की सीमा पर बंदूक तान कर देश की सुरक्षा नहीं हो सकती ।

पूनम : चाचा, यह आप क्या कह रहे हैं !

गनेश : पूनम, देश की असली सीमा हमारी आत्मा के भीतर है । हमें वहां बंदूक तान कर खड़े होना होगा ।

पूनम : हां चाचा, देश का सबसे बड़ा संकट चरित्र का संकट है ।

गनेश : पूनम, पिता हिमालय ने मुझे वज्र सा संकल्प दिया है । मैं इन टूटे पैरों के सहारे गंगोत्री भी गया था । गंगा ने मुझे नयी दृष्टि दी है । बेटी, मैं नये विचारों की खेती करना चाहता हूं ।

शिवनाथ : बेटे, हमें दुख-सुख से ऊपर उठकर नयी यात्रा शुरू करनी

होगी ।

गणेश : हां बाबू, समस्याओं की मकड़जाल से निकलने के लिये लकड़ी की तलवार से काम नहीं चलेगा। इसके लिये हमें नयी दिशा, नयी दृष्टि चाहिये। बाबू देश एक नयी आवाज़, एक नयी दांडी यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा है।

शिवनाथ : हां ठीक है। सुने सभी लोग, मैं पूरे देश को आवाज़ दे रहा हूं ।

उठो मेरे बच्चो !

आओ! हम अपनी मुट्ठियों में दबी हुई किरणों को फिर से धरती में बोयें !

गनेश : ताकि धरती से जनम लें प्रकाश के अंकुर, विश्वास के अंकुर !

शंकर : ताकि धरती से आकाश तक चढ़े एक रोशनी की डाल !

पूनम : ताकि, हमारे-तुम्हारे बीच फिर से चरचा हो सच्चाई की।

गनेश : ताकि हमारे-तुम्हारे बीच से खड़ा सीने पर गोलियां झेलने वाला, एक गांधी ।

(सब गांधी की मूर्ति पर हाथ रखते हैं)

(लक्ष्मी शोभा की मूर्ति के पास पहुंचती है)

(नरेन घिसट कर मूर्ति के पास जाता है)

(नेपत्थ से दो बार)

तकि हमारे-तुम्हारे बीच

फिर खड़ा हो,

सीने पर गौलियां झेलने वाला,

एक गांधी ।

(पटाक्षेप)